इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ

BSOC-105
राजनीतिक समाजशास्त्र

खंड

2

प्रमुख अवधारणाएं

इकाई 3
राज्य और नागरिकता 33

इकाई 4
सत्ता और प्राधिकार 44

इकाई 5
शासन, सरकार और शासकीयता 58

इकाई 6
अभिजन, शासक वर्ग और जनसमूह 69

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 3 राज्य और नागरिकता*

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 राज्य के उद्‌भव के सिद्धांत

- 3.2.1 दैवी अधिकार सिद्धांत
- 3.2.2 विकासवादी सिद्धांत
- 3.2.3 बल का सिद्धांत
- 3.2.4 सामाजिक संविदा का सिद्धांत
- 3.2.5 माक्सवादी दृष्टिकोण

3.3 राज्य क्या है ?

3.4 नागरिकता

3.5 राज्य और नागरिकताः राज्य के प्रकार्य

3.6 सारांश

3.7 शब्दावली

3.8 उपयोगी पुस्तकें

3.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप;

- राज्य के उद्‌भव के सिद्धांत की व्याख्या कर सकेंगे;
- राज्य और नागरिकता को परिभाषित कर सकेंगे; और
- नागरिकता और राज्य के बीच संबंधों की आलोचनात्मक जाँच कर सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हम राज्य और नागतिकता की संकल्पनाओं की जाँच करेंगे। उन मार्गों की विवेचना करेंगे, जिनके द्वारा राज्यों को ऐतिहासिक रूप से समझा गया और किस प्रकार इसने राज्यों के नागरिकों के साथ संबंधों को प्रभावित किया। यह भी देखेंगे कि नागरिकता की समझ एवं नागरिकों के प्रदत्त अधिकार राज्यों की बदलती भूमिका के साथ–साथ कैसे परिवर्तित हुये।

राज्य एक महत्वपूर्ण वैचारिक और सांस्कृतिक रचना है इसी कारण इसे गंभीरता से लेने की आवश्यकता है (मिशेल, 1991)। यद्यपि राज्य की अवधारणा और इसके निहितार्थ के कई आलोचक हुए हैं परन्तु यह एक विशेष समाज के राजनीतिक चरित्र को समझने के लिए अध्ययन की एक महत्वपूर्ण अवधारणा बनी हुई है।

* डॉ. महिमा नायर द्वारा लिखित

अरस्तु ने राज्य की कल्पना एक उच्च प्रकार के समुदाय से अधिक के रूप में नहीं की, जिसका जन्म हुआ है क्योंकि उस समुदाय, राज्य, में जीवन यह दर्शाता है कि मानव स्वभाव वास्तविक रूप में क्या है। उसके लिए, राज्य में अपनी उच्चतम शक्तियों का विस्तार करना मानव स्वभाव के लिए 'स्वाभाविक' था। उन्होंने राज्य की "परिभाषा परिवार और गांवों का एक संघ के रूप में की, जो स्वयं में एक आदर्श और आत्मनिर्भर जीवन रखता है जिसके द्वारा हम एक खुशहाल और सम्मानजनक जीवन जीते है"। जब अरस्तू और उनके समकालीनों ने 'नागरिकों' और उनके द्वारा रचित राज्य की बात की, तो उन्होंने दास–स्वामियों के छोटे समुदाय को ध्यान में रखा, दासों को 'प्राकृतिक' और नैतिक जीवन स्थापित करने के इस प्रयास से कठोरतापूर्वक बहिष्कृत रखा गया था। आज के संदर्भ में, जब सभी राजनैतिक प्रणालियों के लिए बुनियादी तौर पर एक निष्ठा की घोषणा की जाती है जो कि लोकतंत्र है और जिसमें सभी मनुष्यों के लिए समान अधिकार हैं, तो इस तरह का विशेष राज्य शायद ही अस्तित्व में आ सकता है या बना रह सकता है (दास, 1975: 63)।

3.2 राज्य के उद्‌भव के सिद्धांत

राज्य का उदय जिस तरह से उद्‌भूत हुआ और दशकों से राज्य की समझ में बड़े पैमाने पर बदलाव आया है। राज्य की प्रकृति अपने नागरिकों के साथ अपने संबंधों को निर्धारित करती है। इसे समझने के लिए आईये राज्य के उद्‌भव के सिद्धांत का अध्ययन करते हैं।

3.2.1 दैवी अधिकार सिद्धांत

राज्य के प्रारंभिक सिद्धांतों में से एक 'दैवीय उद्‌भव सिद्धांत' या 'राजाओं के दैवीय अधिकार' का सिद्धांत था। इस सिद्धांत के अनुसार राज्य का सृजन ईश्वर द्वारा किया गया था और राजा पृथ्वी पर ईश्वर का एक प्रतिनिधि था और वह ईश्वर से अपना अधिकार प्राप्त करता था। इसने राजा को अपार शक्ति प्रदान की और राजा से प्रश्न नहीं पूछा जा सकता था। इस सिद्धांत की उत्पत्ति धर्म के माध्यम से हुई थी, वैज्ञानिक दृष्टिकोण में वृद्धि के साथ यह सिद्धांत विस्मृति में लुप्त हो गया। राज्य की उत्पत्ति तब ऐतिहासिक वृद्धि के लिए जिम्मेदार थी। राज्य की उत्पत्ति तब ऐतिहासिक विकास के लिए उत्तरदायी थी।

3.2.2 उद्‌विकासवादी सिद्धांत

राज्य का पितृसत्तात्मक सिद्धांत, जिसके मुख्य प्रतिपादक सर हेनरी मेन ने राज्य के विकास के विषय में व्याख्या इस रूप में की – "प्राथमिक समूह सर्वोच्च प्रबल पुरुष की सामान्य अधीनता से जुड़ा परिवार है। परिवारों का एकत्रीकरण वंशावली या घर बनाता हैं। घरों का एकत्रीकरण जनजाति बनाता है। जनजातियों का एकत्रीकरण राष्ट्र–मंडल का गठन करता है" (सी.एफ. आसिफ, 2008)।

इस अवधारणा के अन्य समर्थकों ने राज्य की नींव में तीन कारकों के रूप में देखा, जैसे पुरुष रक्त–संबंध, स्थायी विवाह और पैतृक अधिकार। पितृसत्तात्मक सिद्धांत की मुख्य विशेषता यह है कि परिवार पिता की संतानों के माध्यम से विकसित हुए, न कि माता की। पुरुष संतान एक या अनेक स्त्रियों के साथ विवाह के माध्यम से आबादी को आगे बढ़ाता है। क्योंकि एकल विवाह और बहुविवाह दोनों ही स्वीकार्य थे। घर में सबसे बड़ी पुरुष संतान की प्रमुख भूमिका थी।

इस सिद्धांत के एक अन्य महत्वपूर्ण समर्थक अरस्तू थे। उनके अनुसार–"जिस तरह परिवार बनाने के लिए पुरुष और स्त्री एकजुट होते हैं, उसी तरह कई परिवार गाँवों को बनाने के लिए एकजुट होते हैं और कई गाँवों के संघ से राज्य बनता है जो एक स्वावलंबी इकाई है"।

कुछ लेखकों जैसे कि मैकलेनन, मॉर्गन और एडवर्ड जेनक्स (सी. एफ. आसिफ, 2008) ने राज्य की उत्पत्ति में मातृसत्तात्मक परिवार और बहुपति प्रथा को जिम्मेदार ठहराया। आदिम समाज में स्त्री वंशावली के माध्यम से रक्त–संबंध राज्य के विकास के लिए जिम्मेदार था। प्रक्रिया यह थी कि बहुपति समाज मातृसत्तात्मक समाज में परिणत हुआ और मातृसत्तात्मक समाज ने राज्य का नेतृत्व किया।

इन दोनों सिद्धांतों की आलोचना की गई क्योंकि राज्य की उत्पत्ति कई कारकों जैसे परिवार, धर्म, बल, राजनीतिक आवश्यकता, और अन्य कई कारणों से हुई है। परिवार के विकास के साथ राज्य की उत्पत्ति को चिन्हित करके व्यक्ति कई कारकों की बजाय एक ही कारक को कारण मानकर वही भ्रान्ति उत्पन्न करता है।

3.2.3 बल का सिद्धांत

इस सिद्धांत के अनुसार कुछ शक्तिशाली जनजाति द्वारा युद्ध और आक्रमण राज्य के निर्माण में प्रमुख कारक थे। उस क्षेत्र में दूसरी जनजाति के लोगों को दास बनाकर राज्य की स्थापना के बाद, मुखिया ने कानून और व्यवस्था बनाए रखने और राज्य को बाहरी आक्रमण से बचाने के लिए अपने अधिकार का इस्तेमाल किया। इस प्रकार, बल न केवल राज्य की उत्पत्ति के लिए अपितु राज्य के विकास के लिए भी जिम्मेदार था।

इतिहास राज्य की उत्पत्ति के रूप में बल सिद्धांत का समर्थन करता है। इसका जर्मन दार्शनिकों जैसे फ्रेडरिक हेगेल, इमैनुअल कांट, जॉन बर्नहार्डी और ट्राइस्टकी द्वारा समर्थन किया गया। इनका कहना हैं कि युद्ध और बल राज्य के निर्माण में निर्णायक कारक हैं। आज ट्राइस्टकी के शब्दों में – "राज्य शक्ति है; किसी राज्य का कमजोर होना पाप है। वह राज्य आघात और प्रतिघात की लोक शक्ति है। इतिहास की भव्यता राष्ट्रों के सतत संघर्ष में निहित है और हथियारों के प्रति लगाव इतिहास के अंत तक मान्य होगा। "

इस सिद्धांत की आलोचना केवल 'बल' पर ध्यान केंद्रित करने के कारण की गई, राज्य बल के आधारपर अस्तित्व में आ सकता है, परन्तु खुद को बनाए रखने के लिए इसे अपने नागरिकों की स्वैच्छिक स्वीकृति की आवश्यकता होती है। अतः यह बल नहीं, अपितू राजनीतिक चेतना है जो कि राज्य का मूल है। इसके नागरिकों की राजनीतिक चेतना के बिना, राज्य का निर्माण नहीं किया जा सकता है।

3.2.4 सामाजिक संविदा का सिद्धांत

इस सिद्धांत के अनुसार, राज्य अस्तित्व में आया क्योंकि लोग एकजुट हुए और एक सामाजिक अनुबंध के रूप में राज्य की स्थापना करने वाले एक अनुबंध पर सहमत हुए। इस सिद्धांत के अनुसार, मानव इतिहास में दो विभाग थे– पहली अवधि राज्य की स्थापना से पूर्व की है जिसे "प्रकृति की अवस्था" कहा जाता है और दूसरी अवधि राज्य की स्थापना के पश्चात की है जिसे "नागरिक समाज" कहा जाता है। प्रकृति की स्थिति समाज, सरकार और राजनीतिक प्राधिकरण से रहित थी। प्रकृति की अवस्था में लोगों के संबंधों को विनियमित करने के लिए कोई कानून नहीं था। हॉब्स, लाक और रूसो इस सिद्धांत के मुख्य प्रतिपादक थे (डिलियन, 1958)।

हॉब्स के अनुसार, राज्य से पहले 'प्रकृति की अवस्था' थी जिसे बिना किसी कानून या न्याय के निरंतर जारी रहने वाले संघर्ष द्वारा अभिलक्षित किया जाता था। क्योंकि तभी से यह जीवन बहुत अनिश्चित था, इसलिए लोगों ने सरकार और अंततः राज्य का निर्माण किया। हॉब्स के सिद्धांत के अनुसार, एक शासक जिसे सभी अधिकार दिए गए थे वह अनुबंध का पक्षकार नहीं था। इस अर्थ में, राजा कानून से ऊपर था।

हॉब्स के विपरीत जॉन लाक को विश्वास नहीं था कि इस प्राकृतिक स्थिति में पुरुष अनिवार्य रूप से क्रूर जीवन जीते थे। इस पर भी जीवन को कठिन और दुखद बनाने के लिए पर्याप्त अनिश्चितता और अन्याय था। अतः लाक के अनुसार, लोगों ने अधिक प्रभावी रूप से अपने अधिकारों को निश्चित करने के लिए एक दूसरे के साथ अनुबंध करने का फैसला किया। इसी तरह रूसो ने प्रकृति की स्थिति को खराब रूप में नहीं देखा। उनके विचार में, प्राकृतिक मनुष्य, सभ्यता के जाल और सरकार के अवलंबनों से अप्रभावित, सुखद जीवन जीते थे। हालाँकि, प्रकृति की स्थिति में जीवन सैद्धांतिक रूप से श्रेष्ठ हो सकता है, इसके बावजूद भी यह अंततः मनुष्य के लिए स्पष्ट हो गया कि सरकार आवश्यक थी। मनुष्य ऊर्जा या बुद्धि में एक समान नहीं हैं। अनिवार्य रूप से कोई भी प्राकृतिक स्थिति, सरकार के संयमित प्रभाव के बिना, विभिन्न शक्तिशाली मनुष्यों की महत्वाकांक्षाओं के साथ बदल जाएगी। अंततः, प्रकृति की ऐसी स्थिति में जीवन असुविधाजनक और कष्टप्रद साबित हुआ। इस प्रकार, होब्स और लोके की तरह, रूसो मानते हैं कि सभी पुरुषों को विकसित करने वाला एक सामान्य अनुबंध सभी के लाभ के लिए सरकार और राज्य स्थापित करने के लिए बनाया गया था (अप्पादुरई, 1975: 36)।

3.2.5 मार्क्सवादी दृष्टिकोण

इस दृष्टिकोण के अनुसार वर्ग संघर्ष के कारण बल के द्वारा राज्य अस्तित्व में आया। जैसा कि एंगेल्स ने लिखा था "राज्य समस्त अनंत काल से अस्तित्व में नहीं है। ऐसे समाज हुए हैं जिन्होंने राज्य की अवधारणा के बिना ही अपना निर्माण किया, जिनके पास राज्य और राज्य सत्ता की कोई संकल्पना नहीं थी। आर्थिक विकास के एक निश्चित चरण में, जो अनिवार्य रूप से वर्गों में समाज के मतभेदों के साथ जुड़ा हुआ था, इन मतभेदों के कारण राज्य एक आवश्यकता बन गई"।

गुजरते हुए समय के साथ, समाज परस्पर विरोधी हितों के साथ शत्रुतापूर्ण वर्गों के कारण विभाजित हो रहा था। यह वर्ग–विरोध राज्य का मूल कारण था। जब कृषि संस्कृति की एक कला के रूप में प्रबुद्ध हुई तो भोजन की प्रचुरता थी जो परिणामस्वरूप निजी संपत्ति में परिणत हुई। श्रम के विभाजन के परिणामस्वरूप असाध्य अंतर्विरोध इतने तीव्र हो गए कि किसी भी वर्ग के लिए राज्य में सामंजस्य बनाए रखना या झगड़ालू वर्गों को नियंत्रण में रखना संभव नहीं था।

उत्पादन के साधनों को नियंत्रित करने वाला सबसे प्रभावी वर्ग राज्य की स्थापना के लिए सामने आया ताकि अन्य वर्गों पर अपना प्रभुत्व सुनिश्चित किया जा सके, जो उत्पादन के साधनों का स्वामित्व नहीं रखते थे। इस प्रकार राज्य, अन्य वर्गों पर एक वर्ग के वर्चस्व और उत्पीड़न का एक साधन बन गया।

मार्क्सवादी दृष्टिकोण ने राज्य को अधिरचना के एक अंग के रूप में अर्थव्यवस्था का एक प्रतिफल देखा – जो प्रदत्त सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के साथ एक द्वंद्वात्मक संबंध रखता है, और शासक वर्ग के हित में सामाजिक प्रतिष्ठा को यथास्थिति बनाए रखने के लिए बल और नियंत्रण को एक उपकरण के रूप में प्रयोग करता है। शासक वर्ग उत्पादन के साधनों पर अपने स्वामित्व और नियंत्रण के साथ फिर अर्थव्यवस्था, समाज और राजव्यवस्था के चरित्र को निर्धारित करता है (दास, 1975)।

इतालवी मार्क्सवादी, एंटोनियो ग्राम्सी ने यह कह कर कि राज्य राजनीतिक दल की एक रचना है जो सत्ता रखती है, मार्क्सवादी सिद्धांत से थोड़ा विचलन किया। वे इस बात पर अत्यधिक जोर देते हुए कहते है कि दल राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय सामूहिक इच्छा का प्रतिनिधित्व करता है और इसका उद्देश्य आधुनिक सभ्यता के उच्च और पूर्ण स्वरूप की प्राप्ति है।

इस सिद्धांत की कुछ आलोचनाएँ बल सिद्धांत के समान थीं जिन्हें पहले ही अस्वीकृत कर किया गया था। दूसरे, यह तर्क दिया गया कि यह वर्ग संघर्ष नहीं था, बल्कि राज्य के विकास के लिए संचालित विभिन्न वर्गों के बीच सहयोग था। लेनिन और ग्राम्सी द्वारा एक राजनीतिक पार्टी के समान माने जाने वाले राज्य की एक खतरनाक दृष्टिकोण के रूप में समीक्षा की गई, जो एक सर्वसत्तावादी (totaliatarian) राज्य को प्रोत्साहित करता प्रतीत होता था।

3.3 राज्य क्या है ?

उपरोक्त खण्डों में राज्य की विभिन्न प्रकार की समझ को दर्शाया गया है। हालांकि, एक महत्वपूर्ण योगदान मैकियावेली का था जिन्हें 'राज्य' नाम की उत्पत्ति का श्रेय दिया गया था। राज्य शब्द इतालवी के एक पद 'ला स्टेटो', से लिया गया था, जिसका उपयोग मैकियावेली द्वारा किया गया था। उन्होंने इस शब्द का उपयोग पूरे सामाजिक पदानुक्रम का वर्णन करने के लिए किया जो एक देश को शासित और नियंत्रित करता है। मैकियावेली ने राज्य की अवधारणा को धर्मनिरपेक्ष बनाकर और इसे संप्रभुता के साथ निहित करते हुए इसका आधुनिकीकरण किया। उनके अनुसार, चर्च के साथ राज्य के समन्वय की आवश्यकता नहीं थी; यह (राज्य) उस सीमा क्षेत्र के भीतर सभी अधिकार रखता है (या, कम से कम इसे समाहित करना चाहिए) जिसे यह समाविष्ट करता है। केवल परिवार राज्य से पहले है, और इससे श्रेष्ठतर या इस सवाल से ऊपर कुछ भी नहीं है। उन्होंने राज्य को शक्ति के एक संगठित जनसमुदाय के रूप में देखा, जो उन लोगों द्वारा उपयोग किया जाता है जो अपने किसी भी मनोवांछित परिणाम को पाने के लिए इसे नियंत्रित करते हैं। वे जिस युग से संबंध रखते थे उससे उनका तात्पर्य यह था कि वह इस तथ्य को स्वीकार करते थे कि यदि राज्य के सभी सदस्यों के सामान्य भलाई के लिए आवश्यक हो तो राज्य दमनकारी हो सकता है। उन्होंने एक आदर्श–लोकप्रिय या मुक्त सरकार की कल्पना की, लेकिन जिस तरह की लोकप्रिय सरकार उनके सोच में थी और स्वीकृत थी, वह छोटे गणराज्य को छोड़कर कभी भी अस्तित्व में नहीं थी। और अब तक, क्योंकि उनका राज्य उनमें से एक है जो शक्ति और क्षेत्र के दोनों मामलों में, निरंतर महानता के एक शिखर से, दूसरे की ओर, जहाँ राज्य गायब हो जाता है और व्यक्तिगत शासक बना रहता है, बढ़ रहा है (दास, 1975)।

वेबर (1919) ने राज्य को "लोगों के एक समूह पर उग्र बल के प्रयोग के साथ सर्वोच्च कानूनी प्राधिकार" कहा। फिलिप (1985, सीएफ मिशेल 1991) बताता है, आधुनिक राज्य, असंगत रूप से परिभाषित सीमाओं वाली अभिकरण की एक आकारहीन संरचना प्रतीत होती है, इस प्रकार के गैर–विशिष्ट प्रकार्यों को करती है।

दोषपूर्ण परिभाषित सीमाओं के साथ अभिकरण की एक आकारहीन संरचना, जो कि गैर विशिष्ट विभिन्न कार्यों को करने में लगा है"। नेट्टल के अनुसार, "राज्य अनिवार्य रूप से सामाजिक सांस्कृतिक परिघटना है" जो राज्य के वैचारिक अस्तित्व को पहचानने के लिए लोगों के बीच सांस्कृतिक मनोवृत्ति के कारण होता है। उन्होंने तर्क दिया कि राज्य की धारणाएं प्रत्येक नागरिक की सोच और कार्यों में शामिल हो जाती हैं (पृष्ठ 577)। इस वैचारिक चर की सीमा को समाजों के बीच अनुभवजन्य अंतर के अनुरूप दिखाया जा सकता है, जैसे कि कानूनी संरचना या दल प्रणाली में अंतर (पृष्ठ 579–92)।

हालाँकि राज्य को समझने के अलग–अलग तरीके थे, राज्य की कुछ विशेषताओं को पहचाना जा सकता था जिनमें– शक्ति के प्रयोग पर एकाधिकार, वैधता (जैसा कि शासित द्वारा अनुभव किया जाता है), संस्थागत संरचना, सरकारी कार्यों को संभालने के लिए

स्थापित किया जाना, सम्मिलित है परन्तु एक क्षेत्र पर पूर्ण या आंशिक बल और नियंत्रण के प्रयोग से सीमित नहीं है (रासमुसेन, 2001)।

राज्य की एक व्यापक परिभाषा गार्नर (1935) द्वारा दी गई थी, "राजनीति विज्ञान और सार्वजनिक कानून की अवधारणा के रूप में राज्य अधिक या असंख्य से कम व्यक्तियों का एक समुदाय है, जो स्वतंत्र या केवल बाहरी नियंत्रण के कारण स्थायी रूप से क्षेत्र के एक निश्चित हिस्से पर आधिपत्य रखते है और जो एक संगठित सरकार का स्वामित्व रखता हैं जिसमें अधिक से अधिक निवासियों का समुदाय अभयस्त अनुपालन प्रस्तुत करता है"। राज्य की विभिन्न परिभाषाओं के आधार पर, राज्य के चार मुख्य तत्वों की पहचान की जा सकती है–

1. जनसंख्या
2. अधिकार क्षेत्र
3. सरकार
4. संप्रभुता

आधुनिक दुनिया में, भिन्न जनसंख्या आकार रखने वाले बड़े और छोटे राज्य हैं। इन सब को नियंत्रित करने के लिए एक संस्था की आवश्यकता होती है। सरकार वह मशीनरी है जो राज्य को अपनी विभिन्न नीतियों के माध्यम से सत्ता का प्रयोग करने और जनसंख्या को विनियमित करने में मदद करती है। आंतरिक रूप से राज्य अपने अधिकार क्षेत्र के भीतर अपने सभी नागरिकों और संघों से सर्वोच्च होता जो अपनी आंतरिक संप्रभुता को निर्धारित करता है और बाहरी रूप से राज्य किसी भी विदेशी नियंत्रण की स्वतंत्रता का दावा करता है।

3.4 नागरिकता

"नागरिक" एक समकारी शब्द है। यह स्वयं में अरस्तू की परिभाषा की सक्रियतावाद समेटे हुए है–नागरिक वह है जो बारी बारी से शासन भी करता है और शासित भी है। हम समतावादी भाषा में और सामान्य शब्दों में अधिकारों और कर्तव्यों का वर्णन करते हैः सभी नागरिक ध्वज के प्रति निष्ठा की प्रतिज्ञा करते हैं, एक विस्तृत शब्दालंकारिता का प्रयोग करते हुए जो लैंगिक, प्रजाती, नृजातीयता और वर्ग के अंतर की उपेक्षा करता है। नागरिकता के कई अलग–अलग संभावित अर्थ होते हैं, जो व्यक्ति के एक देश के भीतर उसकी कानूनी स्थिति से लेकर उसके नागरिक, राजनीतिक या एक समुदाय के भीतर व्यवहार के समुच्चय पर सामाजिक प्रतिष्ठा तक होते है जो नागरिक सद्गुण के एक विशेष आदर्श का प्रतिनिधित्व करते हैं (लेविनसन, 2014)।

टी.एच. मार्शल (1950) के अनुसार, नागरिकता एक व्यक्ति को उसके गुणों के द्वारा समुदाय का पूर्ण सदस्य होने के कारण प्रदान की गई स्थिति है। एक समुदाय के नागरिक इस तरह की स्थिति द्वारा उन्हें दिए गए अधिकारों और कर्तव्यों के मामले में समान हैं। अतः एक बहुत ही मौलिक विषय में, नागरिकता के विकासशील संस्थान का उद्देश्य समाज में अधिक समानता बनाना है। नागरिकों के अधिकार और कर्तव्य अलग–अलग ऐतिहासिक संदर्भों में भिन्न हो सकते हैं, लेकिन अधिक से अधिक लोगों को समान नागरिकता का दर्जा देकर अधिक से अधिक समानता प्राप्त करने की आकांक्षा सभी समाजों में आदर्श नागरिकता का मापदंड है। नागरिकता के विकास के लिए, तीन तत्वों को समझना होगा (बॉक्स 1 देखें) जो मार्शल के अनुसार नागरिकता के विकास को समझने में महत्वपूर्ण हैं।

बॉक्स 1

नागरिक स्वतंत्रता व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सुरक्षित करने के लिए आवश्यक है, उदाहरण के लिए, स्वतंत्रता का अधिकार

राजनीतिक अधिकार नागरिक को अपनी राजनीतिक शक्तियों का उपयोग करने में सक्षम बनाता है, या तो राजनीतिक अधिकार रखने वाले निकाय के सदस्य के रूप में या निर्वाचक मंडल के सदस्य के रूप में।

सामाजिक अधिकार – उन अधिकारों को शामिल करते हैं जो नागरिकों को पूरी तरह से अपनी स्वतंत्रता का उपयोग करने की स्वतंत्रता देते हैं। ये एक नागरिक को उसके अधिकारों का प्रयोग करने और समाज के मौजूदा मानकों के अनुसार एक पूर्ण और सभ्य जीवन जीने में सहायता करते हैं। उदाहरणों में आर्थिक कल्याण और सामाजिक सुरक्षा के प्रावधानों के श्रंखला शामिल हैं।

नागरिकता स्वयं में समानता और राजनीतिक भागीदारी के आदर्शों को भी संदर्भित करती है; लेकिन यह उन नीतियों और प्रथाओं का भी उल्लेख कर सकती है जो नागरिकों और बाहरी लोगों में विभेद करती हैं, और इसलिए अनिवार्य रूप से कुछ लोगों को राजनीतिक समुदाय से बाहर रखती है (बोसनिएक, 2006)। एक राष्ट्रीय नागरिकता में शासन उन नियमों और प्रथाओं को शामिल करता है जो समावेश और बहिष्करण दोनों को नियंत्रित करते हैं; जो राजनीतिक समुदाय से सम्बंधित रखते हैं, और राज्य की संस्थाएं उन नागरिकों में विभेद कैसे करतीं हैं जो इससे संबंध नहीं रखते? (अब्बास, 2016)। नागरिकता के विस्तृत अर्थ हैं। यह नागरिकता ही है जिसमें व्यक्तिगत और राजनीतिक हित एक साथ आते हैं, क्योंकि नागरिकता का यही विषय है कि किस प्रकार व्यक्ति राज्य का निर्माण और पुनर्निर्माण करता हैं, और इस निर्माण और पुनर्निर्माण के माध्यम से ही हम लोकतांत्रिक क्रांति के महान आदर्शों को जीवित रखेंगे (केर्बर, 1997: 854) ।

नागरिकता व्यक्तियों, राज्य और उस समुदाय के बीच एक संबंध पैदा करती है जिसमें वे रहते हैं, और उन हितधारकों का एक सांझे नियति के तत्व वाले संबंध स्थापित करते हैं, जो सांझे भविष्य में निवेश करते हैं (सी. एफ. फिशर, 2010)।

राज्य और नागरिकों के बीच संबंध राज्य द्वारा निष्पादित स्वरुप और कार्यों से निर्धारित होता है। एक राज्य क्या कार्य करता है और वे अधिकार जो यह अपने नागरिकों को प्रदान करता है वास्तव में राज्य के स्वरूप को निर्धारित करता है। सभी राज्य मार्शल (बॉक्स 1) द्वारा दिए गए तीनों मुख्य अधिकार प्रदान नहीं कर सकते हैं। अगला अनुभाग राज्य और नागरिकता के बीच इस संबंध का अन्वेषण करता है।

3.5 राज्य और नागरिकता: राज्य के प्रकार्य

19 वीं शताब्दी की शुरुआत में राज्य की भूमिका व्यवस्था के रखरखाव तक ही सीमित थी, इसके परे किसी भी प्रयास को व्यक्तिगत स्वतंत्रता का संकुचन माना जाता था। राज्य एक 'नकारात्मक' या 'पुलिस राज्य' था (अप्पादुराई, 1975रू 97)। यद्यपि यह राज्य का एकमात्र कार्य नहीं था, आधुनिक राज्य ने शिक्षा, स्वास्थ्य, सार्वजनिक क्षेत्रों के रखरखाव और इसी तरह के विनियमन से संबंधित गतिविधियों को भी संभाला। वर्तमान राज्य का लक्ष्य सभी की सर्वोत्तम भलाई के लिए काम करना है। राज्य को प्रत्येक की स्वतंत्रता और सभी की स्वतंत्रता के बीच एक उचित संतुलन बनाना होता है। राज्य केवल अपने नागरिकों के जीवन और व्यक्तिगत सुरक्षा के लिए ही जिम्मेदार नहीं है। यह उनकी

आर्थिक सुरक्षा के लिए भी जिम्मेदार है। यह पर्याप्त नहीं है कि अदालतों द्वारा कानूनी न्याय प्रदान कर दिया जाए और राज्य अपने प्रवर्तन के साधनों द्वारा उन्हें उपलब्ध कराए। राज्य को अपने नागरिकों के बीच सामाजिक न्याय भी प्रदान करना होता है। उसे उस संतुलन का निवारण करना चाहिए जहाँ संतुलन विशेषाधिकार द्वारा या अनुचित प्रतिस्पर्धा के कारण झुका हुआ है। राज्य कभी भी पूर्ण समानता नहीं ला सकता क्योंकि यह प्रकृति के क्रम के खिलाफ है–मनुष्य अपनी क्षमता और योग्यता में सदा असमान रहा हैं। लेकिन राज्य यह असमानता को दूर कर सकता है, जब हर नागरिक को अपने स्वयं के व्यक्तित्व के पूर्ण परिणामों को अनुभव करने से रोका जाता हो।

इस तरह के विस्तार से, इसका मतलब यह है कि हम राज्य को असीमित शक्तियां दे रहे हैं। कुछ दार्शनिकों ने राज्य और समाज के बीच अंतर के बारे में बात की; इसका अर्थ है कि राज्य की कार्रवाई की सीमाएं हैं। हालांकि, दुनिया के लोगों के बीच हमेशा यह दृष्टिकोण नहीं रहा है। उदाहरण के लिए, यूनानियों के बीच, ब्लंटस्ली के अनुसार, 'राज्य सर्वज्ञ था'। नागरिक राज्य के सदस्य के अलावा कुछ भी नहीं था। उनका पूरा अस्तित्व राज्य पर निर्भर था और राज्य के अधीन था (अप्पादुराई, 1975)। राज्य के प्राचीन विचार ने मनुष्य के पूरे जीवन को समुदाय, धर्म और कानून, नैतिकता, कला, संस्कृति और विज्ञान में समाविष्ट किया। राज्य व्यापार को नियंत्रित कर सकता है, व्यवसाय को निर्धारित कर सकता है, धर्म या मनोरंजन को विनियमित कर सकता है। प्राचीन यूनान के लिए, शहर एक समय में एक राज्य, चर्च और स्कूल था।दूसरे शब्दों में, यूनानियों ने राज्य और समाज के बीच कोई अंतर नहीं किया। बेटिल (1999) के अनुसार हर तरह के राज्य ने समाज के विकास में मदद नहीं की; यह आधुनिक संवैधानिक स्थिति है जो नागरिक समाज के विकास के लिए प्रासंगिक है (व.प्र., 2589)।

नव–उदारवादी शासनों और भूमंडलीकरण की ताकतों ने अपनी सीमाओं के भीतर सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों को नियंत्रित करने के लिए राज्यों की क्षमता को क्षीण करके राज्य की भूमिका को कम करने का प्रयास किया है। हालांकि, राज्य समकालीन राजनीतिक जीवन में एक महत्वपूर्ण उपस्थिति बनाए हुआ है, सैन्य अभियानों के अभियोजन, अंतर्राष्ट्रीय संधियों की बातचीत, असफल वित्तीय संस्थानों के बचाव और विनियमन (और राष्ट्रीयकरण), और समाज के विशिष्ट (आमतौर पर कमजोर) वर्गों पर लक्षित कल्याण के निरंतर प्रावधान जैसे विभिन्न कार्यों द्वारा अनुकरणीय है। हालांकि उदारीकरण और वैश्वीकरण की दुनिया ने अनिवार्य रूप से राजनीतिक अर्थव्यवस्था की प्रकृति को नई आकृति प्रदान की है, किंतु निश्चित रूप से राज्य को नकारा है, लेकिन राज्यों और उनके नागरिकों के बीच बातचीत के नए रूपों की मांग की है (विलियम्स एट अल, 2011)। राज्य कमजोर समूहों के लिए कल्याण, आजीविका और सामाजिक सुरक्षा नीतियों में सुधार के लिए भी योजनाबद्ध हस्तक्षेप का खाका तैयार करने में लगा है।

राज्य पर अकादमिक ज्ञानविदों ने माना कि राज्य का वेबर द्वारा दिया गया ढांचा एक सु–परिभाषित, स्वायत्त राजनीतिक इकाई के रूप में है जो राज्यों, समाज और अर्थव्यवस्था के बीच बढ़ती परिवर्तनशील सीमाओं के लिए जिम्मेदार नहीं हैं। राज्य को अधिक प्रणालीगत दृष्टिकोणों के पक्ष में एक विश्लेषणात्मक निर्माण, या इसके कठोर संशोधन के रूप में छोड़ना, दोनों ही इस चुनौती के लिए असंतोषजनक प्रतिक्रियाएं हैं। इसके बजाय, राज्य की विरोधाभासी गुणवत्ता की बढ़ती मान्यता है, (विलियम्स एट अल, 2011)।

एक वैचारिक शक्ति के रूप में राज्य की अवधारणा को अब्राम्स द्वारा आगे समझाया गया है, जो कि एक ठोस प्रणाली और संस्थान के रूप में अध्ययन किए जा रहे राज्य के विपरीत, 'राज्य– विचारधारा– प्रलम्बित, संचित और अलग–अलग समय में अलग–अलग

समाजों में विभिन्न रूप से माना जाता है', पर जोर देते हैं (व.प्र., 1988: 57) राज्य और राजनीति पर मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण, फोकस को राज्य की मैक्रो–संरचनाओं और उच्च राजनीति के संस्थानों से दूर ले जाता है जहां रोजमर्रा की दुनिया को समस्याग्रस्त किया जाता है जहां राजनीति एक केंद्रीय घटक है (फजल, 2016)। राज्य अब नौकरशाही नियमों, कार्यालयों और प्रक्रियाओं की भिन्न, समन्वयात्मक प्रणाली के रूप में अब परिकल्पित नहीं किया जाता है। पंचायत कार्यालय, कलेक्टर सचिवालय, राजस्व अधिकारी, श्रम अधिकारी, थाना या केंद्रीय बाजार में तैनात यातायात पुलिसकर्मी के रूप में स्थानीय राज्य अपने रूप और स्थान में भिन्न होता है । इस प्रकार यह नागरिकों के अनुभवों पर केंद्रित है क्योंकि वे राज्य के इन विभिन्न स्थानों और राजनीति के शासन क्षेत्र के संदर्भ में आते हैं (फजल, 2016, 14)।

राज्य के साथ नागरिकों के अनुभव अक्सर भिन्न होते हैं और राज्य में अपने लोगों के साथ बातचीत के तरीकों में अधिक पारदर्शिता और जवाबदेही उत्पन्न करने के लिए, भारत में 2005 में सूचना का अधिकार अधिनियम पारित किया गया था। यह इसी प्रकार की पहलों के माध्यम से संभव है कि जो सीमांत समूह है राज्य का अलग–अलग अनुभव करते हैं, और समावेशी नागरिकता के विचारों की कल्पना करने और उन्हें साकार करने के नए रास्ते खुल सकते हैं, और इस प्रक्रिया में कभी–कभी राज्य की प्रकृति को भी बदल देते हैं (सी.एफ., विलियम्स एट अल, 2011)।

बोध प्रश्न

1. राज्य की उत्पत्ति के विषय में सामाजिक अनुबंध सिद्धांत की व्याख्या करें।
2. रिक्त स्थान भरें
   i) ..... सिद्धांत कहता है कि राज्य निर्माण के लिए युद्ध और आक्रमण प्रमुख कारक थे।
   ii) मार्क्सवादी सिद्धांत कहता है कि ..... राज्य का मूल कारण था।
   iii) राज्य शब्द सबसे पहले ..... द्वारा गढ़ा गया था।
   iv) जनसंख्या, ..., ... और .....राज्य के चार मुख्य तत्व हैं।
3. क्या नवउदारवादी ताकतों और वैश्वीकरण ने राज्य की भूमिका को कम कर दिया है। चर्चा करें।

3.6 सारांश

इस इकाई में, हमने विभिन्न सिद्धांतों के बारे में सीखा है जो राज्य की उत्पत्ति के बारे में बताते हैं।विभिन्न सिद्धांतों में धर्म, परिवार, बल, सामाजिक अनुबंध, वर्ग संघर्षों से संबंधित पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है जिसके कारण राज्य का गठन हुआ। वैध प्राधिकारी के रूप में राज्य की प्रारंभिक समझ जो कि अपने नागरिकों के खिलाफ हिंसा का प्रयोग कर सकता है, को शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा सहित राज्य के लिए कई जिम्मेदारियों को शामिल करने के लिए विस्तृत किया गया था। नवउदारवादी (एजेंडे) की वृद्धि ने राज्य की भूमिका को कम करने का प्रयास किया जो कि हो नहीं पाया। राज्य अपने नागरिकों के नागरिक, राजनीतिक और सामाजिक अधिकारों से संबंधित मुद्दों को हल करके अपने नागरिकों के जीवन में एक महत्वपूर्ण घटक बना हुआ है। राज्य कमजोर समूहों के लिए कल्याण,

आजीविका और सामाजिक सुरक्षा नीतियों में सुधार के लिए तैयार किये गए योजनाबद्ध हस्तक्षेप के साथ संलग्न है। इसलिए, अपने नागरिकों के जीवन में राज्य की भूमिका महत्वपूर्ण बनी हुई है और नए तंत्र (जैसे सूचना का अधिकार) की शुरूआत के साथ नागरिक कुछ हद तक राज्य की गतिविधियों को भी विनियमित कर सकते हैं।

3.7 शब्दकोष

बहुपतित्व – एक प्रकार का बहुविवाह जहाँ एक महिला एक ही समय में दो या अधिक पति स्वीकार करती है।

मातृसत्ता – यह उन समाजों को संदर्भित करती है जहाँ माताएँ मुख्य शक्ति पदों को धारण करती हैं और वंश उनसे उत्पन्न संतानों के माध्यम से जाना किया जाता है।

नव–उदारवादी – यह विचारधारा 'बलपूर्वक राज्य' की बजाय 'व्यक्तियों पर अधिकार' की वकालत करता है ।

वैश्वीकरण – सामाजिक प्रक्रिया जहां सामाजिक और सांस्तिक व्यवस्थाओं पर भूगोल की बाध्यताएं पीछे छूट गई है और लोग इस बात से अवगत हैं कि वे पुनरावृत्ति कर रहे हैं (वाटर्स, 1995)।

3.8 उपयोगी पुस्तकें

अप्पादुराई, ए, दा सब्सटांस ऑफ पॉलिटिक्स, मद्रासः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1975।

बैट्टी, ए. 1999. सिटिजनशिप, स्टेट एंड सिविल सोसाइटी. इकॉनोमिक एंड पोलिटिकल वीकली, खंड. 34, सं. 36 (सितम्बर. 4–10, 1999), प्रष्ठ. 2588–2591।

दास, ए. 1975. थियोरीज ऑफ दा स्टेटः फ्रॉम एरिस्टोटल टू मार्क्स. सोशल साइंटिस्ट, 3 (8): 63–69।

टी. एच. मार्शल. 1950. सिटिजनशिप एंड सोशल क्लास, एंड अदर एसेज, कैम्ब्रिजः सीयूपी।

3.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. इस सिद्धांत के अनुसार राज्य की स्थापना सामाजिक अनुबंध के रूप में लोगों द्वारा एकजुट होने से हुई थी। उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि किसी भी प्रकार के विनियमन के बिना जीवन बहुत अनिश्चित था और इसलिए सभी व्यक्तियों के विकास के लिए सरकार और राज्य स्थापित करने की आवश्यकता थी।

2. i) बल
   ii) वर्ग संघर्ष
   iii) मैकियावेली
   iv) अधिकारक्षेत्र, सरकार और संप्रभुता

3. जबकि उदारीकरण और वैश्वीकरण की दुनिया ने अनिवार्य रूप से राजनीतिक अर्थव्यवस्था के स्वरूप को बदल दिया है, राज्य की भूमिका महत्वपूर्ण बनी हुई है। इसने समकालीन राजनीतिक जीवन में एक महत्वपूर्ण उपस्थिति बनाए हुआ है, सैन्य अभियानों के अभियोजन, अंतर्राष्ट्रीय संधियों की अन्तर्क्रिया, असफल वित्तीय संस्थानों

के बचाव और विनियमन (और राष्ट्रीयकरण), और समाज के विशिष्ट (आमतौर पर कमजोर) वर्गों पर लक्षित कल्याण के निरंतर प्रावधान जैसे विभिन्न कार्यों द्वारा अनुकरणीय है।

संदर्भ सूची

अब्बास, आर (2016) इंटरनल माइग्रेशन एंड सिटिजनशिप इन इंडिया, जर्नल ऑफ एथनिक एंड माइग्रेशन स्टडीज, 42:1, 150–168।

अप्पादुराई, ए, दा सब्सटांस ऑफ पॉलिटिक्स, मद्रासः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1975।

आसिफ, एम. 2008. स्टेट एंड फ्रीडम इन इंडियाः ए स्टडी ऑफ राईट टू लाइफ एंड पर्सनल लिबर्टी, अनपब्लिशड पी.एच.डी डीजर्टेशान, अलीगड़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगड़।

बैट्टी, ए. 1999. सिटिजनशिप, स्टेट एंड सिविल सोसाइटी. इकॉनोमिक एंड पोलिटिकल वीकली, खंड. 34, सं. 36 (सितम्बर. 4–10, 1999), प्रष्ठ. 2588–2591।

दास, ए. 1975. थियोरीज ऑफ दा स्टेटः फ्रॉम एरिस्टोटल टू मार्क्स. सोशल साइंटिस्ट, 3 (8): 63–69।

डिलनय इंट्रोडक्शन टू पोलिटिकल साइंस, डी वैन नोस्ट्रंड को. इंक., प्रिन्सटन, न्यू जर्सी, 1958।

फाजल, टी. 2016. इंट्रोडक्शनः एवरीडे स्टेट एंड पॉलिटिक्स इन इंडिया. इंडियन एन्थ्रोपोलोजिस्ट, खंड. 46, सं. 2, स्पेशल इशू ओन एवरीडे स्टेट एंड पॉलिटिक्स (जुलाई–दिसम्बर 2016), प्रष्ठ. 13–17।

फिशर, जे. एल. 2010. पायनियर्स, सेट्लार्स, एलियंस, एक्जाईल्सः दा डीकोलोनाइजेशनस ऑफ वाइट आइडेंटिटी इन जिंबाब्वे, एएनयू प्रेसरू ऑस्ट्रेलिया।

गार्नर, जे. डब्लू. 1935. पॉलिटिकल साइंस एंड गवर्मेंट. दा वर्ल्ड प्रेस लिमिटेडः कलकत्ता, https://archive.org/details/in.ernet.dli.2015.46440/page/n3 पर उपलब्ध, जुलाई 18, 2019 को प्राप्त।

केर्बेर, एल. 1997. दा मीनिंग ऑफ सिटिजनशिप सोर्सः दा जर्नल ऑफ अमेरिकन हिस्ट्री, खंड. 84, सं. 3 (दिसम्बर., 1997), प्रष्ठ. 833–854।

लेविंसन, मैरा, (2014). सिटिजनशिप एंड सिविक एजुकेशन. इन एनसईक्लोपीडिया ऑफ एजुकेशनल थ्योरी एंड फिलोसोफी, एड. डेनिस सी. फिलिप्स. थाउजेंड ओक्स, सीएः सेज।

मिशेल, टी. 1991. दा लिमिट्स ऑफ दा स्टेटः बियॉन्ड स्टैटिस्ट एप्रोचिज एंड देयर क्रिटिक्स।

नेट्टल, जे. पी. 1968. "दा स्टेट एज ए कोन्केप्तुअल वेरिएबल". वर्ल्ड पॉलिटिक्स 20:559–92।

राममुसेन, पी. आर. 2001. "नेशंस" और "स्टेट्स" एन अटेम्प्ट ऐट डेफिनिशन, स्कोलिअस्ट, https://www.globalpolicy.org/component/content/article/172/30341.ht उसपर उपलब्ध जुलाई 15, 2019 को प्राप्त।

टी. एच. मार्शल. 1950. सिटिजनशिप एंड शोशल क्लास, एंड अदर एसेज, कैम्ब्रिजः सीयूपी, दा अमेरिकन पोलिटिकल साइंस रिव्यु, 85 (1): 77–96।

विलियम्स, पी, भास्कर, वी और चोपड़ा, डी. 2011. मर्जिनैलिटी, एजेंसी एंड पॉवरः एक्स्परिएन्सिन्ग दा स्टेट इन कोंटेम्पोरेरी इंडिया, पसिफिक अफ्रीका अफेअर्स, खंड 84, सं. 1, पृष्ठ 7–23।

इकाई 4 शक्ति और प्राधिकार*

इकाई की संरचना

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 शक्ति और प्राधिकार की अवधारणा

- 4.2.1 शक्ति
- 4.2.2 प्राधिकार
- 4.2.3 प्राधिकार के तत्व

4.3 सामाजिक क्रिया के प्रकार और प्राधिकार के प्रकार

- 4.3.1 सामाजिक क्रिया के प्रकार
- 4.3.2 प्राधिकार के प्रकार
  - 4.3.2.1 पारंपरिक प्राधिकार
  - 4.3.2.2 करिश्माई प्राधिकार
  - 4.3.2.3 तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार
- 4.3.3 वर्गीकरण के बीच अनुरूपता का अभाव

4.4 नौकरशाही

- 4.4.1 नौकरशाही के प्रमुख लक्षण
- 4.4.2 नौकरशाही में अधिकारियों की विशेषताएं

4.5 सारांश

4.6 संदर्भ लेख

4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.8 शब्दावली

4.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- मैक्स वेबर के द्वारा बताई गई शक्ति और प्राधिकार की अवधारणाओं को समझ सकेंगे;
- वेबर के सामाजिक क्रिया और प्राधिकार के प्रकारों के बीच के संबंध को समझ सकेंगे;

* प्रो. रवीन्द्र कुमार के द्वारा ईएसओ 13, ब्लॉक 4, यूनिट 16 अनुकूलित गयी है।

- प्राधिकार के तीनों प्रकारों पारंपरिक, करिश्माई और तर्कसंगत–कानूनी को विस्तार पूर्वक वर्णन कर सकेगें; और
- तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार के संचालन के लिए नौकरशाही एक साधन के रूप में कार्य करता है, उसकी व्याख्या कर सकेगें।

4.1 प्रस्तावना

इस इकाई में अंतर्गत शक्ति और प्राधिकार की अवधारणा को समझेगें। पहले खंड (4.2) में, वेबर के विशेष संदर्भों के साथ शक्ति और प्राधिकार की समाजशास्त्रीय अवधारणाओं की एक संक्षिप्त चर्चा की गयी है। दूसरा खंड (4.3) वेबर के द्वारा बताये सामाजिक क्रियाओं के प्रकारों का उल्लेख किया गया है जो और प्राधिकार के तीनों प्रकारों अर्थात् पारंपरिक, करिश्माई और तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार का विश्लेषण किया गया है। तीसरा खंड (4.4) की चर्चा नौकरशाही पर केंद्रित की गयी है जो तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार को अभ्यास में लाने वाला एक उपकरण है।

4.2 शक्ति और प्राधिकार

आइए, अब हम सामान्य समाजशास्त्रीय अर्थों के साथ–साथ वेबर की विशिष्ट संदर्भ में सत्ता और प्राधिकार की प्रमुख अवधारणाओं का विश्लेषण करते हैं।

4.2.1 शक्ति

हमें परिभाषित करना चाहिए कि हम लोग शक्ति से क्या समझते हैं। जितना हम सोचते हैं, शक्ति को परिभाषित करना उतना सरल नहीं है। निश्चित रूप से हम सभी ने किसी न किसी तरह से शक्ति का अनुभव किया है, शायद एक दोस्त का प्रभाव जो हमें एक राजनीतिक बैठक में जाने के लिए राजी करता है और विवश करता है, या हमलावर का वो बल जिसका हमलोग सामना करते हैं या बंदूक की नोंक पर जबरन कोई स्मार्ट फोन छीनता है। हर दिन हम लोगों को शक्ति का सामना करना पड़ता है। आइए हम कुछ परिभाषाओं पर एक नजर डालते हैं और उनकी पहचान करते हुए हम उन मतभेदों को भी समझने का प्रयास करेगें जो इस बात पर बहस करते हैं कि कैसे शक्ति की अवधारणा की जाती है।

सामान्य प्रयोग में, शक्ति शब्द का अर्थ बल या नियंत्रण करने की क्षमता से होता है। समाजशास्त्री इसे अपनी इच्छाओं को पूरा करने और अपने निर्णयों और विचारों को लागू करने के लिए एक व्यक्ति या समूह की क्षमता के रूप में वर्णित करते हैं। इसमें उनकी इच्छा के विरुद्ध भी दूसरों के व्यवहार को प्रभावित करने और/या नियंत्रित करने की क्षमता शामिल है।

कार्ल मार्क्स और मैक्स वेबर की कृतियाँ शक्ति को परिभाषित करने के लिए उत्कृष्ट आधार के रूप में काम करती हैं। मार्क्स ने स्थापित किया कि आर्थिक संरचनाएं जैसे निगम या जो पूँजी पर नियंत्रणत रखते हैं और अधिक निकट देखें तो बॉस, ये लोग ही शक्ति के सामाजिक स्रोतों का प्रतिनिधित्व करते हैं। मजदूरी के द्वारा मजदूर की कार्यक्षमता या उपस्थिति पूंजीवादी समाज की विशिष्ट उपज है। मार्क्स के अनुसार, श्रमिक, मजदूरी और वर्गीय हितों के बीच का संबंध मनुष्य को गैर मजदूरी के कार्य संबंधित स्वहितों को आगे बढ़ाने से पृथक करने का स्रोत थे बल्कि व्यक्तियों को एक–दूसरे से भी अलग करने का तरीका था। मार्क्स के लिए, सामाजिक वर्गों के बीच के संबंधों में शक्ति का एक आर्थिक संदर्भ निहित होता है।

मैक्स वेबर के दृष्टिकोण से शक्ति सामाजिक संबंधों का एक पहलू है। किसी अन्य व्यक्ति के व्यवहार पर स्वयं की इच्छा को थोपने की संभावना में इसे संदर्भित किया जा सकता है। शक्ति सामाजिक अंतःक्रिया में मौजूद होती है और असमानता की स्थिति पैदा करती है क्योंकि जिसके पास भी शक्ति होती है वह इसे दूसरों पर थोपता है। शक्ति का प्रभाव एक परिस्थिति से दूसरी परिस्थिति में भिन्न होता है। एक ओर, यह शक्तिशाली व्यक्ति की क्षमता पर निर्भर करता है कि वह शक्ति का प्रयोग करे। दूसरी ओर यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह किस हद तक दूसरों के विरोध को रोक पाने में सक्षम होता है। वेबर कहते हैं कि जीवन के सभी क्षेत्रों में शक्ति का प्रयोग किया जा सकता है।

शक्ति युद्ध के मैदान या राजनीति तक ही सीमित नहीं है। इसे बाजार के स्थान पर, व्याख्यान मंच पर, सामाजिक समारोहों में, खेल में, वैज्ञानिक चर्चा और यहां तक कि दान की गतिविधियों में भी देखा सकता है। उदाहरण के लिए, भिक्षा या 'दान' देना भी एक प्रकार से अपनी उच्चतर आर्थिक शक्ति को दिखाने का एक सूक्ष्म तरीका है। आप भिक्षा देकर भिखारी के चेहरे पर खुशी की भावना और नहीं देकर निराशा की भावना ला सकते हैं।

शक्ति के स्रोत क्या हैं? वेबर ने शक्ति के दो विपरीत स्रोतों की चर्चा की है। ये इस प्रकार हैं:

क) वह शक्ति जो हितों के मेल से प्राप्त होती है, और वह औपचारिक रूप से मुक्त बाजार में विकसित होती है। उदाहरण के लिए, चीनी के उत्पादकों का एक समूह अपने लाभ को अधिकतम करने के लिए बाजार में उनके उत्पादन की आपूर्ति को नियंत्रित करता है।

ख) प्राधिकार की एक स्थापित प्रणाली जो आज्ञा के अधिकार और उसके पालन के कर्तव्य का निर्धारण करती है। उदाहरण के लिए, सेना में, एक जवान अपने अधिकारी की आज्ञा का पालन करने के लिए बाध्य होता है। प्राधिकार की एक स्थापित प्रणाली के माध्यम से अधिकारी अपनी शक्ति प्राप्त करता है।

1900 की शुरुआत में वेबर की शक्ति के अध्ययन के बाद से, सामाजिक वैज्ञानिकों ने समाज में शक्ति के वितरण का क्या अर्थ है, और साथ ही ये पहचानने पर ध्यान केंद्रित किया कि किस प्रकार के संसाधन कुछ व्यक्तियों और समूहों को शक्तिशाली या शक्तिविहीन बनाते हैं। अन्य लोगों ने इस धारणा को आगे बढ़ाया कि यह राजनीति में सबसे अधिक निहित है जबकि मानवीय पहलुओं के सभी पक्षों में, जैसे सामाजिक क्रियाओं और अभिव्यक्ति में नहीं है। बॉक्स 1.1 में संक्षेपित कई परिभाषाओं पर विचार करें।

बॉक्स 4.1

शक्ति की परिभाषा में विविधताएं

लेखक ने शक्ति को परिभाषित किया है ———————————— इच्छित प्रभावों के निर्माण के लेखक के रुप में है। बर्ट्रेंड रसेल (1938: 2)

शक्ति का संबंध उन निर्णयों के साथ है जो कोई भी मनुष्य उन व्यवस्थाओं के बारे में करते हैं जिनके तहत वे रहते हैं, और उन घटनाओं के बारे में जो उनके समय का इतिहास बनाते हैं ———————————— कोई भी मनुष्य इतिहास बनाने के लिए स्वतंत्र हैं लेकिन कुछ व्यक्ति दूसरों की तुलना में अधिक स्वतंत्र हैं। सी राइट मिल्स (1959: 181)

बाध्यकारी दायित्वों के निष्पादन को सुरक्षित करने की सामान्यीकृत क्षमता जब दायित्वों के सामूहिक लक्ष्यों पर उनके असर के संदर्भ में वैध ठहराया जाता है और जहां, पुनर्गणना के मामले में, नकारात्मक प्रतिबंधों द्वारा प्रवर्तन का अनुमान लगाया जाता है। टॉलकॉट पार्सन्स (1967: 297)

विनिमय या लेनदेन में प्रयोग किए जाने वाले व्यक्तियों या समूहों के बीच सभी प्रकार के प्रभाव, जहां अपनी इच्छाओं को स्वीकार करने के लिए दूसरों को पुरस्कृत करके प्रेरित करता है। पीटर ब्लाउ (1964: 115)

कुछ व्यक्तियों की दूसरों के ऊपर जान बूझ कर और पूर्वाभासी प्रभाव पैदा करने की क्षमता है। डेनिस रॉग (1979: 2)

परिणामों को प्राप्त करके सुरक्षित करने की क्षमता जहां इन परिणामों की प्राप्ति दूसरों उपक्रमों (एजेंसी) पर निर्भर करती है। एंथोनी गिडेंस (1976: 111–112)

अंत में, हमें अपने दायित्यों में निर्धारित, निंदा, वर्गीकृत कर आंका जाता है, और एक निश्चित स्थिति में जीने या मरने वाले उन लोगों के लिए, सच्चे विमर्शों के एक कार्य के रूप में, जो शक्ति के विशिष्ट प्रभावों के वाहक हैं। मिशेल फौकॉल्ट (1980: 94)

बाध्यकारी निर्णय लेने की सामाजिक क्षमता जिसका समाज के लिए दूरगामी परिणाम हैं। एंथोनी ओरम (1989: 131–132)

दूसरों के कार्यों या विचारों को प्रभावित करने की क्षमता। ऑलसेन और मार्गर (1993: 1)

स्रोतः बेट्टी ए डोबरट्ज मजण्ंस.2012. पॉवर्स, पॉलिटिक्स, एंड सोसाइटीः एन इंट्रोडक्शन टू पॉलिटिकल सोशियोलॉजी, रटलेज, लंदन और न्यूयॉर्क

जैसा कि आपने अंतिम बिंदु में देखा है कि शक्ति पर की गई कोई भी चर्चा हमें इसकी वैधता के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करती है। यह वैधता ही है, जो वेबर के अनुसार प्राधिकार का मुख्य बिंदु है। आइए, अब हमलोग प्राधिकार की अवधारणा का उल्लेख करते हैं।

4.2.2 प्राधिकार

प्राधिकार के लिए वेबर द्वारा प्रयोग में लिये जाने वाले जर्मन शब्द ''हैरशाफ्ट'' का विभिन्न प्रकार से अनुवाद किया गया है। कुछ समाजशास्त्री इसे 'अधिकार', दूसरों का 'प्रभुत्व' या 'आदेश' कहा है। 'हैरशाफ्ट' एक ऐसी स्थिति है जिसमें हैर या स्वामी (मास्टर) दूसरों पर अपना प्रभुत्व जमाते हैं या आदेश देते हैं। रेमंड एरन (1967: 187) ने 'हैरशाफ्ट' को परिभाषित करते हुए कहा है कि मास्टर या स्वामी की क्षमता में लोगों के द्वारा आज्ञाकारिता को प्राप्त किया जाता है और सैद्धांतिक रूप से भी उसके प्रति आज्ञाकारी होते हैं। इस इकाई में, 'हैरशाफ्ट' जो वेबर की अवधारणा है वह ''प्राधिकार'' शब्द को दर्शाती है।

एक सवाल उठाया जा सकता है, अर्थात्, शक्ति और प्राधिकार के बीच अंतर क्या है? शक्ति, जैसा कि आपने समझा है कि दूसरे को नियंत्रित करने की क्षमता है या उस क्षमता को संदर्भित करता है। प्राधिकार का अर्थ वैध शक्ति से है। इसका अर्थ है कि स्वामी को आज्ञा देने का अधिकार है और वह आज्ञा मानने की अपेक्षा कर सकता है। आइए, अब उन तत्वों को देखें जो प्राधिकार का गठन करते हैं।

4.2.3 प्राधिकार के तत्व

प्राधिकार की प्रणाली के अस्तित्व के निम्नलिखित तत्वों का मौजूद रहना आवश्यक है:

i) कोई व्यक्तिगत शासक/स्वामी या शासकों/स्वामी का एक समूह।

ii) कोई व्यक्ति/समूह जो शासित होता है।

iii) शासित व्यक्तियों के आचरण को प्रभावित करने की शासक की इच्छा जो आज्ञाओं के माध्यम से व्यक्त की जा सकती है।

iv) शासकों द्वारा दिखाए गए अनुपालन या आज्ञाकारिता के संदर्भ में शासकों के प्रभाव का प्रमाण।

v) प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष साक्ष्य जो यह दर्शाता है कि शासित ने आंतरिक रूप से इस तथ्य को स्वीकार कर लिया है कि शासक के आदेशों का पालन करना चाहिए।

हम देखते हैं कि प्राधिकार का अर्थ यह है कि शासकों और शासितों के बीच पारस्परिक संबंध होना जरूरी है। शासकों का यह मानना है कि उन्हें अपने अधिकार के प्रयोग करने का वैध अधिकार है। दूसरी ओर, शासितों ने इस शक्ति को स्वीकार किया और इसका अनुपालन करते हुए इसकी वैधता को मजबूत किया है। अब सोचे और करें 1 को पूरा करने और अपनी प्रगति की जाँच करने का समय है।

सोचे और करें 1

अपने दैनिक जीवन से कम से कम पांच प्राधिकारों का उदाहरण दें। उनमें कौन से तत्व शामिल हैं? उन पर एक पृष्ठ का एक नोट तैयार करें। अपने अध्ययन केंद्र में सह–शिक्षार्थियों के साथ, यदि संभव हो, तो अपने नोट का आदान–प्रदान करें।

बोध प्रश्न 1

i) एक पंक्ति में प्राधिकार की अवधारणा को परिभाषित करें।

.....

.....

.....

.....

ii) लगभग तीन पंक्तियों में प्राधिकार के दो महत्वपूर्ण स्रोत वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

iii) तीन पंक्तियों में प्राधिकार के तीन महत्वपूर्ण तत्वों को इंगित करें।

.....

.....

.....

.....

आइए, अब वेबर द्वारा चिन्हित प्राधिकारों के प्रकारों का विश्लेषण करें। इससे पहले कि हम ऐसा करें, उससे पहले सामाजिक क्रिया के वर्गीकरण का अध्ययन करेगें और यह बहुत ही महत्वपूर्ण है। वेबर के प्राधिकार के प्रकारों का चर्चा किया जायेगा जो कि आप जल्द ही देखेंगे की यह सामाजिक क्रिया के प्रकारों के साथ निकटता से जुड़ा हुआ है।

4.3 सामाजिक क्रिया के प्रकार और प्राधिकार के प्रकार

मैक्स वेबर ने समाजशास्त्र को सामाजिक क्रिया के व्यापक विज्ञान के रूप में वर्णित किया है (एरेन, 1967: 187) । सामाजिक क्रिया का जो वर्गीकरण प्रस्तुत किया गया है उसी की हम संक्षेप में चर्चा करेंगे।

4.3.1 सामाजिक क्रिया के प्रकार

वेबर चार अलग–अलग प्रकार की सामाजिक क्रियाओं को पहचाना है। वो हैं:

i) किसी लक्ष्य के संबंध में ज़्वैकरेशनल क्रिया या तर्कसंगत क्रिया

इसका एक उदाहरण है: एक पुल का निर्माण करने वाला एक इंजीनियर है, जो लक्ष्य प्राप्त करने के लिए एक निश्चित तरीके से कुछ सामग्रियों का उपयोग करता है। इसकी गतिविधि अपने लक्ष्य यानि निर्माण को पूरा करने की दिशा में संचालित होती है।

ii) किसी के मूल्य के संबंध में तार्किक क्रिया (वेर्टरेशनल)

यहाँ, देश के लिए अपनी जान देने वाले सैनिक का उदाहरण दिया जा सकता है। धन की तरह विशिष्ट भौतिक लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में उनकी कार्यवाही निर्देशित नहीं है। यह सम्मान और देशभक्ति जैसे कुछ मूल्यों के लिए है।

iii) भावनात्मक क्रिया

इस तरह की कार्यवाही से व्यक्ति के मन की भावनात्मक स्थिति का पता चलता है। यदि कोई बस में किसी लड़की को छेड़ता है, तो उस लड़के के आपत्तिजनक व्यवहार से चिढ़कर थप्पड़ मार सकती है। उसे इतना उकसाया गया है कि उसने हिंसक प्रतिक्रिया दी है।

iv) पारंपरिक क्रिया

यह एक क्रिया उन रीति–रिवाजों और लंबे समय से मान्यताओं द्वारा निर्देशित होती है, जो अभ्यास या स्वरूप बन जाती है। पारंपरिक भारतीय समाज में, बड़ों को प्रणाम या नमस्कार करना एक तरह से स्वभाव बन जाता है और ऐसा सहज ही हो जाता है।

उपर्युक्त तथ्य से वेबर के समाजिक क्रिया के वर्गीकरण को समझा जा सकता है और प्राधिकार के वर्गीकरण में यह परिलक्षित होता है। हम इस बारे में निम्नलिखित उप–भाग (4.3.2) में चर्चा करेंगे।

4.3.2 प्राधिकार के प्रकार

जैसा कि आप पहले ही उप–खंड 4.2.1 में पढ़ चुके हैं, प्राधिकार का अर्थ वैधता से है। वेबर के अनुसार, वैधता की तीन प्रणालियां हैं, जिनमें से प्रत्येक इसके संगत मानदंडों के अनुसार है, जो कि आदेश देने की शक्ति को सही ठहराती है। यह वैधता की ये प्रणालियां

हैं जिन्हें निम्नलिखित प्रकार के प्राधिकार के रूप में नामित किया गया है।

(i) पारंपरिक प्राधिकार

(ii) करिश्माई प्राधिकार

(iii) तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार

आइए हम इनमें से प्रत्येक प्रकार का कुछ विस्तार से वर्णन करें।

4.3.2.1 पारंपरिक प्राधिकार

वैधता की यह व्यवस्था पारंपरिक समाजिक क्रिया से निरूपित होती है। दूसरे शब्दों में, यह प्रथागत कानून और प्राचीन परंपराओं की पवित्रता पर आधारित है। यह इस विश्वास पर आधारित है कि इसमें निश्चित प्राधिकार का सम्मान करना ही है क्योंकि यह अनादि काल से अस्तित्व में है।

पारंपरिक प्राधिकार में, शासक अपनी विरासत की स्थिति के आधार पर व्यक्तिगत अधिकार का उपभोग करते हैं। उनकी आज्ञाएँ रीति–रिवाजों के अनुसार होती हैं और उनके पास शासन से आज्ञा पालन करवाने का भी अधिकार भी होता है। अक्सर, वे अपनी शक्ति का दुरुपयोग करते हैं। जो व्यक्ति उनका पालन करते हैं, वे उनकी प्रजा कहलाते हैं। वे अपने स्वामी की व्यक्तिगत निष्ठा के कारण उनके आदेश का पालन करते है और उनके बीच दयालु संबंध का निर्माण भी होता है। आइए हम अपने ही समाज से एक उदाहरण लें। आप भारत में जाति व्यवस्था से परिचित हैं। सदियों से निम्न जातियों ने उच्च जातियों द्वारा अत्याचार को क्यों सहन किया? इसे समझाने का एक तरीका यह है क्योंकि उच्च जातियों के अधिकार को परंपरा और प्राचीन मान्यताओं का समर्थन था। कुछ लोगों का मानना है कि निम्न जातियों के उत्पीड़न को समाजिक स्वीकृति प्राप्त थी। इस प्रकार, हम देख सकते हैं कि पारंपरिक प्राधिकार लंबे समय से चली आ रही परंपराओं की पवित्र गुणवत्ता में विश्वास पर आधारित है। यह उन लोगों को वैधता देता है जो प्राधिकार का प्रयोग करते हैं।

पारंपरिक प्राधिकार लिखित नियमों या कानूनों के माध्यम से कार्य नहीं करता है। यह पीढ़ियों से वंशानुक्रम द्वारा विरासत में मिलता है। पारंपरिक प्राधिकार को नातेदारी और व्यक्तिगत पसंदीदा की मदद से प्राप्त किया जाता है।

आधुनिक समय में, पारंपरिक प्राधिकार की घटनाओं में कमी आई है। राजशाही, पारंपरिक अधिकार का कुछ विशेष (क्लासिक) उदाहरण अभी भी मौजूद है, लेकिन अत्यधिक सीमित रूप में है। इस संदर्भ में, इंग्लैंड की महारानी पारंपरिक प्राधिकार का प्रतिनिधित्व करती हैं, किन्तु जैसा कि आप जानते हैं, वे वास्तव में अपने अधिकार का प्रयोग नहीं करती हैं। उनके नाम पर कानून बनाए जाते हैं, लेकिन कानून का निर्माण विधायिका यानि लोगों के प्रतिनिधियों द्वारा तय किया जाता है। महारानी के अधीन संसद है, जो राज्य का संचालन करती है, लेकिन वह मंत्रियों की नियुक्ति नहीं करती है। वह एक नाममात्र के राष्ट्राध्यक्ष हैं। संक्षेप में, पारंपरिक प्राधिकार लंबे समय से चली आ रही परंपराओं से अपनी वैधता प्राप्त करता है, जो कुछ को आज्ञा देने और दूसरों को मानने के लिए मजबूर करने में सक्षम बनाता है। यह वंशानुगत प्राधिकार है और इसके लिए लिखित नियमों की आवश्यकता नहीं है। शासक अपने प्राधिकार का प्रयोग अपने रिश्तेदारों और मित्रों की मदद से करते हैं। वेबर इस तरह के प्राधिकार को तर्कहीन मानता है। इसलिए यह आधुनिक विकसित समाजों में बहुत कम पाया जाता है।

4.3.2.2 करिश्माई प्राधिकार

करिश्मा का अर्थ है कुछ व्यक्तियों में एक असाधारण गुण का होना (देखें बॉक्स 16.1)। ऐसे गुण से साधारण लोगों की निष्ठा और भावनाओं पर अधिकार कर लेने की अद्वितीय शक्तियाँ मिल जाती है। करिश्माई प्राधिकार किसी व्यक्ति के प्रति असाधारण आस्था और उस व्यक्ति द्वारा बताई गई जीवन के तरीके पर आधारित होता है। ऐसे अधिकार की वैधता व्यक्ति की अलौकिक या जादुई शक्तियों में विश्वास पर टिकी होती है। करिश्माई नेता, अपनी शक्ति को चमत्कार, सैन्य और अन्य जीत या शिष्यों की नाटकीय समृद्धि के माध्यम से सिद्ध करता है। जब तक करिश्माई नेता अपने शिष्यों की नजरों में अपनी चमत्कारी शक्तियों को साबित करना जारी रखते हैं, तब तक उनका प्राधिकार बरकरार रहता है। आपने महसूस किया होगा कि करिश्माई प्राधिकार जिस प्रकार की सामाजिक क्रिया से संबंधित है, वह भावनात्मक क्रिया है। करिश्माई नेताओं की शिक्षाओं और गुहार (अपील) के परिणामस्वरूप शिष्य अत्यधिक आवेशित भावनात्मक स्थिति में होते हैं। वे अपने नायक की पूजा करते हैं।

बॉक्स 4.2 करिश्मा

करिश्मा शब्द का अर्थ दिव्य या दैवीय प्रेरित उपहार है। यह ईश्वरीय कृपा का उपहार है। इस शब्द का प्रयोग वेबर द्वारा ''दूसरों पर एक प्रकार की शक्ति को निरूपित करने के लिए किया जाता है, जिसे इसके अधीन उन लोगों द्वारा प्राधिकार के रूप में भी माना जाता है। करिश्मा के धारक एक इंसान हो सकते हैं, जिस स्थिति में उनके अधिकार की व्याख्या दैवीय मिशन, अंतर्दृष्टि या नैतिक गुणों के मिथक के रूप में की जा सकती है।" (देखें स्क्रूटन 1982: 58)।

करिश्माई प्राधिकार प्रथागत मान्यताओं या लिखित नियमों पर निर्भर नहीं है। यह विशुद्ध रूप से उस नेता के विशेष गुणों का परिणाम है जो अपनी व्यक्तिगत क्षमता से शासन करता है या नियम बनाता है। करिश्माई प्राधिकार का आयोजन नहीं किया जाता है। इसलिए कोई वेतन पर आधारित कर्मचारी या प्रशासनिक व्यवस्था नहीं होता है। नेता और उनके सहायकों के पास एक नियमित व्यवसाय नहीं होता है और वे अक्सर अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को अस्वीकार करते हैं। ये विशेषताएं कभी–कभी करिश्माई नेताओं को क्रांतिकारी बनाती हैं, क्योंकि उन्होंने सभी पारंपरिक सामाजिक दायित्वों और मानदंडों को अस्वीकार किया होता है।

एक व्यक्ति के व्यक्तिगत गुणों पर आधारित होने के कारण, उस नेता की मृत्यु या लापता होने पर उत्तराधिकार की समस्या उत्पन्न हो जाती है। जो नेता व्यक्ति उस नेता का स्थान लेता है, उसके पास करिश्माई शक्तियां नहीं हो सकती हैं। नेता के मूल संदेश को प्रसारित करने के लिए ऐसी स्थिति में किसी प्रकार का संगठन विकसित होता है। मूल करिश्मा पारंपरिक प्राधिकार या तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार में परिवर्तित हो जाता है। वेबर के अनुसार, इस प्रकार का करिश्मा या चमत्कार का नियतकरण या नेमीकरण है। (बॉक्स 4.2 देखें)

बॉक्स 4.3: नेमीकरण (Routirisation)

वेबर ने नेमीकरण का प्रयोग ''करिश्माई नेतृत्व के परिवर्तन को संस्थागत नेतृत्व में बदलने के संदर्भ में किया जिसमें व्यक्ति के व्यक्तित्व के स्थान पर पद यानि कार्यालय ही प्राधिकार का केंद्र बन जाता है। (स्क्रूटन 1982: 415)।

यदि करिश्माई नेता का कोई बेटा/बेटी या किसी करीबी रिश्तेदार उसका उत्तराधिकार प्राप्त करता है तब यह पारंपरिक प्राधिकार सफल हो जाता है। दूसरी ओर, अगर करिश्माई गुणों की पहचान करके उन्हें लिखा जाता है, तो यह तर्कसंगत कानूनी प्राधिकार में बदल जाता है, जहां कोई भी इन गुणों को प्राप्त कर सकता है। करिश्माई प्राधिकार को इस प्रकार अस्थिर और अस्थायी कहा जा सकता है। हम पूरे इतिहास में करिश्माई नेताओं के उदाहरण पा सकते हैं। संत, भविष्यवक्ता और कुछ राजनीतिक नेता ऐसे प्राधिकार के उदाहरण हैं। कबीर, नानक, जीसस, मोहम्मद, लेनिन और महात्मा गांधी, कुछ के नाम करिश्माई नेता थे। उनके व्यक्तिगत गुणों के कारण लोगों में उनके लिए श्रद्धा होती थीं और उनके द्वारा प्रचारित संदेश के कारण ही ऐसा होता था, इसलिए नहीं कि वे पारंपरिक या तर्कसंगत–कानूनी अधिकार का प्रतिनिधित्व करते थे। आइए अब मैक्स वेबर द्वारा पहचाने गए तीसरे प्रकार के प्राधिकार का वर्णन करते हैं, लेकिन इससे पहले हम बोध प्रश्न 2 हल करेंगे।

बोध प्रश्न 2

निम्नलिखित तीन प्रश्नों के सही उत्तर पर सही निशान लगाएं।

i) वेबर के अनुसार निम्नलिखित में से कौन एक प्रकार का प्राधिकार नहीं है?

   क) पारंपरिक प्राधिकार

   ख) तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार

   ग) करिश्माई प्राधिकार

   घ) व्यक्तिगत प्राधिकार

ii) जब किसी नेता का मूल करिश्मा पारंपरिक या तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार में बदल जाता है, तो वेबर इसे क्या कहते हैं?

   क) सामान्य लोगों की भक्ति को पाने के लिए किसी की शक्ति का नेमीकरण या नियमितकरण (routirisation)

   ख) वैधता की नेमीकरण

   ग) नेतृत्व करने की क्षमता की नेमीकरण

   घ) अपनी इच्छा के विरुद्ध दूसरे के व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए एक की क्षमता की नेमीकरण

iii) पारंपरिक प्राधिकार की वैधता का स्रोत क्या है।

   क) भूमि का कानून

   बी) लंबे समय तक प्रथागत कानून

   ग) नेता का उत्कृष्ट प्रदर्शन

   घ) उपरोक्त सभी।

4.3.2.3 तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार

यह शब्द प्राधिकार की उस प्रणाली को संदर्भित करता है, जो तर्कसंगत और कानूनी दोनों

अर्थों में प्रयुक्त होता है। यह नियमित प्रशासनिक कर्मचारियों में निहित होती है जो विशेष लिखित नियमों और कानूनों के अनुसार कार्य करते हैं। इस प्राधिकार में लोगों के नियुक्ति का आधार उनकी प्राप्त योग्यता होती है और इसी के आधार पर उनकी नियुक्ति होती है और यह योग्यता निर्धारित और संहिताबद्ध भी होते हैं। इस प्रकार के प्राधिकार में लोग इसे एक पेशा या व्यवसाय मानते हैं और उन्हें इस कार्य के लिए वेतन दिया जाता है। इस प्रकार, यह एक तर्कसंगत–कानूनी प्रणाली है।

यह कानूनी है क्योंकि यह उस राष्ट्र के नियमों के अनुसार होता है जिसे लोग मानते हैं और पालन करने के लिए बाध्य भी होते हैं। लोग इसकी वैधता, अध्यादेश और नियमों के साथ–साथ नियमों को लागू करने वालों के पदों या उपाधियों को स्वीकार करते हैं और उनका सम्मान करते हैं।

तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार आधुनिक समाज की एक विशिष्ट विशेषता है। यह तर्कशक्ति की प्रक्रिया का प्रतिबिंब है। याद रखें कि वेबर तर्कसंगतता को पश्चिमी सभ्यता की प्रमुख विशेषता मानते हैं। वेबर के अनुसार, यह मानव विचार और विचार – विमर्श की विशेष देन है। अब तक आपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार और तर्कसंगत क्रिया के बीच संबंध को स्पष्ट रूप से समझ लिया है।

आइए, हम तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार के उदाहरणों को देखें। हमलोग कर संग्राहक का पालन करते हैं क्योंकि हम उन अध्यादेशों की वैधता में विश्वास करते हैं जो वे लागू करते हैं। हम यह भी मानते हैं कि हमें कराधान नोटिस भेजने का कानूनी अधिकार है। हम अपने वाहनों को रोकते हैं जब ट्रैफिक पुलिसकर्मी हमें ऐसा करने का आदेश देता है क्योंकि हम कानून द्वारा निहित अधिकार का सम्मान करते हैं। आधुनिक समाजों को व्यक्तियों द्वारा नहीं, बल्कि कानूनों और अध्यादेशों द्वारा नियंत्रित किया जाता है। हम पुलिसकर्मी को उसकी स्थिति और उसकी वर्दी के कारण मानते हैं जो कानून का प्रतिनिधित्व करता है, इसलिए नहीं कि वह मिस्टर 'एक्स' या मिस्टर 'वाई' है। तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार न केवल राजनीतिक और प्रशासनिक क्षेत्रों में ही नहीं, बल्कि बैंकों और उद्योगों जैसे आर्थिक संगठनों के साथ–साथ धार्मिक और सांस्कृतिक संगठनों में भी मौजूद है।

4.3.3 वर्गीकरण के बीच अनुरूपता का अभाव

सामाजिक क्रिया के प्रकार और प्राधिकार के प्रकारों पर उपरोक्त चर्चा से यह स्पष्ट हो सकता है कि पारंपरिक प्राधिकार का संबंध पारंपरिक क्रिया से संबंधित है, तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार लक्ष्य के संबंध में तर्कसंगत क्रिया से संबंधित है और करिश्माई प्राधिकार का संबंध भावात्मक क्रिया से संबंधित है। हालाँकि यह आसानी से पता चलता है कि वेबर चार प्रकार की सामाजिक क्रियाओं और केवल तीन प्रकार के प्राधिकारों का चर्चा किया है। सामाजिक क्रिया की वर्गीकरण और प्राधिकार की वर्गीकरण के बीच समानता के कमी के मुद्दे पर खुली चर्चा का विषय हो सकता है।

तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार को आप स्पष्ट रूप से नौकरशाही की संस्था के माध्यम से समझ सकते हैं और इसके माध्यम से ही सुचारू रूप से कार्य किया जाता है। इस प्रकार कह सकते हैं कि नौकरशाही एक ऐसा माध्यम है जिसके माध्यम से तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार अपने कार्य को अंजाम तक पहुँचाता है। अगले भाग पर जाने से पहले, गतिविधि 2 को पूरा करें।

सोचे और करें 2

प्राधिकार की वैधता के आधार पर विशेष संदर्भ के साथ अपने स्वयं के समाज से तर्कसंगत–कानूनी या पारंपरिक प्राधिकरण का एक उदाहरण दें। एक पृष्ठ का नोट तैयार करें। अपने अध्ययन केंद्र में अपने सह–शिक्षार्थियों के नोट्स के साथ, यदि संभव हो, तो अपने नोट का आदान–प्रदान करें।

4.4 नौकरशाही

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है कि, नौकरशाही एक प्रणाली है जो तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकरण को लागू करती है। मैक्स वेबर ने नौकरशाही का विस्तार से अध्ययन किया और एक आदर्श प्रकार के प्रारूप के संदर्भ में उल्लेख किया, जिसमें नौकरशाही की सब प्रमुख विशेषताएं शामिल है। आइए, हम इस आदर्श प्रारूप का विश्लेषण करें, जो हमें नौकरशाही की प्रमुख विशेषताओं के बारे में बताता है।

4.4.1 नौकरशाही के प्रमुख लक्षण

i) नौकरशाही अधिकार क्षेत्र के सिद्धांत के आधार पर पर्याप्त रूप से कार्य करती है जो निम्नलिखित कानूनों और नियमों और पर निर्भर करता है।

   क) नौकरशाही में शामिल होने वाली गतिविधियों को अधिकारियों के बीच आधिकारिक कर्तव्यों के रूप में वितरित किया जाता है।

   ख) यह एक स्थायी या नियमित प्रणाली है जिसके द्वारा अधिकारियों को प्राधिकार में शक्ति निहित होता है। इस प्राधिकार को राष्ट्र के कानूनों द्वारा सख्ती से पालन किया जाता है।

   ग) इसमें स्थिर और पद्धतिगत प्रक्रियाएं हैं जो यह सुनिश्चित करती हैं कि अधिकारी पर्याप्त रूप से अपने कर्तव्यों का पालन करें।

उपर्युक्त तीन विशेषताएँ 'नौकरशाही प्राधिकार' का गठन करती हैं, जो विकसित और आधुनिक समाजों में देखा जा सकता है।

ii) नौकरशाही का दूसरा लक्षण यह है कि प्राधिकार में अधिकारियों के बीच पदानुक्रम होता है। इससे हमारा तात्पर्य है कि इसमें अधीनता और आधिपत्य से निर्मित संरचना बनता है जो मजबूती से कार्य करता है। उच्च अधिकारियों के निर्देश पर निचले अधिकारी कार्य करते हैं और उनके लिए जवाबदेह भी होते हैं। इस प्रणाली का लाभ यह है कि शासित लोग निचले अधिकारियों के प्रति असंतोष होने पर उच्च अधिकारियों से अपील कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि आप किसी कार्यालय में क्लर्क या अनुभाग अधिकारी के व्यवहार या प्रदर्शन से असंतुष्ट हैं, तो आप निवारण के लिए उच्च अधिकारी से अपील कर सकते हैं।

iii) नौकरशाहों के कार्यालय का प्रबंध लिखित दस्तावेजों या फाइलों के माध्यम से किया जाता है। कर्मचारियों के द्वारा इन दस्तावजों को सुरक्षित एवं सही तरीके से रखा जाता है जो विशेष रूप से इस उद्देश्य के लिए नियुक्त किए जाते हैं।

iv) नौकरशाहों के कार्यालय का कार्य अत्यधिक विशिष्ट होता है और कर्मचारियों को तदनुरुप प्रशिक्षित किया जाता है।

v) एक पूरी तरह से विकसित नौकरशाही कार्यालय में कर्मचारियों की पूर्ण कार्य क्षमता की मांग करता है। ऐसे मामले में, अधिकारियों को निश्चित समय से ऊपर काम करने के लिए मजबूर किया जा सकता है।

एक नौकरशाही प्रणाली की मुख्य लक्षणों को देखने के बाद, आइए अब हम उन अधिकारियों के बारे में कुछ सीखें जिन्हें आपने ऊपर उल्लेख पाया है।

वेबर ने नौकरशाही प्रणाली में अधिकारियों की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख किया है:

i) अधिकारियों के लिए कार्यालय का कार्य उनका व्यवसाय' है।

ii) उन्हें अपनी नौकरियों के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाता है।

iii) उनकी योग्यता कार्यालय में उनकी स्थिति या रैंक को निर्धारित करती है।

iv) उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे अपना काम ईमानदारी से करें।

उनके आधिकारिक पदों का उनके व्यक्तिगत जीवन पर भी असर पड़ता है। आइये देखते हैं कैसे।

i) नौकरशाही प्रणाली में अधिकारी समाज में एक उच्च स्थिति का दर्जा प्राप्त कर लेते हैं।

ii) अक्सर, उनकी नौकरियां में स्थानांतरण के दायित्व को भी शामिल होता है। इस संदर्भ में हमारा कहने का अर्थ यह है कि उनके अपने पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन में कुछ अस्थिरता बनी रहती है क्योंकि कई बार एक विभाग से दूसरे विभाग में और एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित किया जा सकता है।

iii) अधिकारियों को कार्य दक्षता या स्थिति के अनुसार वेतन नहीं मिलता है बल्कि उनकी रैंक यानि दर्जा के अनुसार ही वेतन का निर्धारण होता है। दर्जा जितना ऊँचा होगा वेतन भी उतना होगा। उन्हें पेंशन, भविष्य निधि, चिकित्सा और अन्य सुविधाओं जैसे लाभ भी प्राप्त होते हैं। उनकी नौकरियों को बहुत सुरक्षित माना जाता है।

iv) अधिकारी को अच्छे करियर की संभावनाएं भी बनी रहती हैं। यदि वे अनुशासित तरीके से काम करते हैं तो वे नौकरशाही में निचले पायदानों से ऊंचे स्थानों पर पहुँच सकते हैं।

यह समय बोध प्रश्न 3 को हल करने का है।

बोध प्रश्न 3

i) नौकरशाही इसका एक उदाहरण है।

क) पारंपरिक प्राधिकार ।

ख) तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार।

ग) करिश्माई प्राधिकार।

घ) उपरोक्त में से कोई नहीं।

ii) नौकरशाही प्राधिकार के महत्त्वपूर्ण लक्षणों का तीन पंक्तियों में उल्लेख करें।

.....

.....

.....

.....

.....

iii) नौकरशाही के अधिकारियों की चार विशेषताओं में उल्लेख करें ।

.....

.....

.....

.....

.....

4.5 सारांश

यह इकाई 'शक्ति' और 'प्राधिकार' की वेबरियन अवधारणाओं की चर्चा के साथ शुरू हुई। इसके बाद मैक्स वेबर द्वारा बताये गए सामाजिक क्रिया के प्रकारों पर चर्चा की गई, उसके बाद उनके द्वारा वर्णित प्राधिकार के प्रकारों का भी विश्लेषण किया गया। इसके बाद हमलोगों ने कुछ विस्तार से पारंपरिक, करिश्माई और तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार का अध्ययन किया। अंत में, यह इकाई नौकरशाही प्रणाली पर ध्यान केंद्रित किया है, जिसके माध्यम से तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार संचालित होता है। इस इकाई में नौकरशाही कार्यालय की विशेषताओं को रेखांकित किया गया और इसके गठन वाले अधिकारियों या कर्मचारियों भी चर्चा की गयी।

4.6 शब्दावली

शक्ति : दूसरों पर अपनी इच्छा थोपने की क्षमता।

प्राधिकार : जब शक्ति वैध हो जाती है तो वह प्राधिकार बन जाता है।

आदर्श प्रारूप : वेबर द्वारा विकसित एक शोध पद्धति का साधन है जिसके माध्यम से किसी घटना की सबसे अधिक पाई जाने वाली विशेषताएं को व्यक्त किया जाता है। आदर्श प्रारूप एक विश्लेषणात्मक विधि है जिसके साथ सामाजिक वैज्ञानिक मौजूदा समय की वास्तविकता को तुलनात्मक .ष्टि से देखता है।

सामान्यीकरण/ नैमीकरण : करिश्माई प्राधिकार के पारंपरिक या तर्कसंगत कानूनी प्राधिकार में परिवर्तन की एक प्रक्रिया।

मुद्रा अर्थव्यवस्था : किसी भी आर्थिक लेन देन को पैसे के द्वारा किया किया जाता है।

4.7 उपयोगी पुस्तकें

बेंडिक्स, रेनहार्ड. 1960. मैक्स वेबरः एन इंटेलेक्चुअल पोर्टरेट. हाईनमनः लंदन.

फ्रायंड, जुलिएन. 1968. द सोशियोलॉजी ऑफ मैक्स वेबर. रैंडम हाउसः न्यूयॉर्क.

एलन, कीरन. 2004. मैक्स वेबरः ए क्रिटिकल इंट्रोडक्शन. प्लूटो प्रेसः एन आर्बर.

4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

i) शक्ति दूसरों पर अपनी इच्छा थोपने की क्षमता है।

ii) शक्ति औपचारिक मुक्त बाजार में पनपने वाले हितों के मेल में विकसित होती है। शक्ति को फिर से प्राधिकार की एक स्थापित प्रणाली से प्राप्त किया जा सकता है जो आज्ञा पालन करने का अधिकार और कर्तव्य का निर्धारण करता है।

iii) क) व्यक्तिगत शासक/स्वामी या शासकों/स्वामी के एक समूह की उपस्थिति

ख) शासित कोई व्यक्ति/समूह की उपस्थिति

ग) शासक द्वारा दिखाए गए अनुपालन और आज्ञाकारिता के संदर्भ में शासकों के प्रभाव का प्रमाण

बोध प्रश्न 2

i) घ)

i) क)

iii) ख)

बोध प्रश्न 3

i) ख)

ii) नौकरशाही प्राधिकार के महत्वपूर्ण लक्षण हैं

क) यह क्षेत्राधिकार क्षेत्र के सिद्धांत पर काम करता है जो कुछ प्रशासनिक नियमों पर निर्भर करता है।

ख) एक स्थाई नियमित प्रणाली है जिसके द्वारा अधिकारियों को अधिकार के साथ निहित किया जाता है।

ग) कठोर और व्यवस्थित प्रक्रियाएं हैं जो यह सुनिश्चित करती हैं कि अधिकारी पर्याप्त रूप से अपने कर्तव्यों का पालन करें।

iii) नौकरशाही के अधिकारियों की महत्वपूर्ण विशेषताएं हैंः

क) कार्यालय का काम अधिकारी के लिए एक व्यवसाय है

ख) अधिकारियों को विशेष रूप से उनकी नौकरी के लिए प्रशिक्षित किया जाता है

ग) उनकी योग्यता कार्यालय में उनकी स्थिति या रैंक निर्धारित करती है, और

घ) उनसे ईमानदारी से काम करने की अपेक्षा की जाती है।

इकाई 5 शासन, सरकार और शासकीयता*

संरचना

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 सरकार

5.3 शासन

5.4 शासकीयता

5.5 सरकार, शासन और शासकीयता के बीच अंतर्संबंध

5.6 सारांश

5.7 शब्दावली

5.8 उपयोगी पुस्तकें

5.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद, आप :

- सरकार, शासन और शासकीयता को परिभाषित कर सकेंगे;
- सरकार, शासन और शासकीयता के बीच अंतर को समझ सकेंगे;
- सरकार, शासन और शासकीयता के बीच संबंधों को समझ सकेंगे; और

5.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में हमने सत्ता और प्राधिकार की चर्चा की। इस इकाई में, हम सरकार, शासन और शासकीयता पर चर्चा करेंगे। हम सरकार, शासन और शासकीयता के बीच के अंतर्संबंधों को देखेंगे।

ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी (2019) नीति, कार्यों, और मामलों के संचालन (एक राज्य, संगठन या लोगों का अधिकार) को शासन के रूप में परिभाषित करता है। शासन के तरीकों ने सरकार, शासन और शासकीयता जैसी तीन अवधारणाओं को जन्म दिया है जो एकसमान सी प्रतीत होती हैं लेकिन वे 'शासन के संबंधों' को व्यवस्थित करने के तरीकों के कारण भिन्न होते हैं'। इस इकाई में, हम शासन की इन तीनों अवधारणाओं के बारे में जानेंगे। सरकार, शासन और शासकीयता सत्ता में रहने वाले लोगों के काम के तरीकों का अध्ययन करेंगे। एक स्तर पर राजनीतिक वैज्ञानिकों ने शासन को सरकार (स्टोकर, 1998:17) का पर्याय माना, लेकिन उनमे से अधिकांश ने उन्हें विश्लेषणात्मक रूप से अलग शब्द मानता है। बेवीर और रोड्स (2003:45) ने शासन को 'सरकार के प्रकृति या अर्थ में परिवर्तन' के रूप में परिभाषित किया। फूको (2000) ने सरकार को 'व्यवहार के आयोजन' के रूप में

* डा. महिमा नायर, स्वतंत्र शोधार्थी द्वारा लिखित

परिभाषित किया। दूसरी ओर, शासकीयता 'सरकार और प्रशासन के कार्यकाल और कला के विशिष्ट मनोवृत्तियों को अलग करने का प्रयास है, जो कि 'प्रारंभिक आधुनिक' यूरोप से उभरा है, जबकि सरकार शब्द का उपयोग मानव व्यवहार के निर्णायक दिशा के लिए एक सामान्य शब्द के रूप में किया जाता है (डीन, 1999:2)। इन अवधारणाओं की जाँच से हमें सत्तासीन लोगों के स्वभाव को समझने में मदद मिलती है – चाहे सत्ता केंद्रीकृत हो या विकेंद्रीकृत। इसके केंद्र में, शासन पर बहस मूल रूप से इससे संबंधित है कि कौन या क्या समाज को मजबूत करता है। इस प्रकार, एक 'सरकार' के दृष्टिकोण से, 'समाज एक नमूना के रूप में सरकार के मार्गदर्शन के बिना खुद को अधिक स्वसंचालित करता है' (पीटर्स, 2000:36)। 'सरकार' और 'शासन' दोनों दृष्टिकोणों में शासकीयता की अवधारणा शामिल है क्योंकि यह अवधारणा शासन संचालन में प्रयुक्त विधियों से संबंधित है।

इन अवधारणाओं की तलाश करते हुए हम फूको (1977–78) द्वारा उठाए गए प्रश्नों के उत्तर ढूँढते हैं "कैसे, किसके द्वारा, किस हद तक और किन तरीकों से शासित हों।" व्यक्तिगत रूप से इन अवधारणाओं की खोज करने के बाद, हम तीनों के अंतर्संबंधों पर चर्चा करेंगे और विभिन्न दृष्टिकोणों के उदय के कारणों का संक्षेप में अध्ययन करेंगे।

5.2 सरकार

सरकार वो साधन है जिसके द्वारा संगठनात्मक नीति निर्धारण और उसको लागू करने के लिए एक तंत्र बनाया जाता है। प्रत्येक सरकार का अपना एक संविधान होता है, जिसमें उसके प्रशासकीय सिद्धांतों और दर्शन का विवरण होता है। सामान्यतः, इसमें निहित दर्शन व्यक्तिगत स्वतंत्रता के सिद्धांत और सम्पूर्ण राज्य सत्ता (अत्याचार) के विचार के बीच संतुलन स्थापित करता है। इसमें आम तौर पर एक विधायिका, कार्यकारी और न्यायपालिका शामिल होती है जो इस संतुलन को बनाए रखने में मदद करती है।

सरकार भी कम या ज्यादा व्यवस्थित, विनियमित और शक्ति के प्रतिबिंबित तरीकों ("तकनीक") का प्रतीक भी है जो तर्क के विशिष्ट रूप ("तार्किकता") में दूसरों के ऊपर शक्ति के सहज प्रयोग से परे होती है, जो किसी क्रियाविधि को परिभाषित करती है। सरकार ऐसे में "कमोवेश आचरण का नियमन उचित तकनीकी साधनों का तर्कसंगत अनुप्रयोग करती है" (हिन्देस 1996:106)। इसे सत्ता प्रयोग की संस्था के रूप में देखा जा सकता है। शक्ति दूसरों के व्यवहार को प्रभावित करने की क्षमता है और सत्ता ऐसा करने का अधिकार देता है और इसलिए यह वैध शक्ति है। वेबर आज्ञाकारिता के विभिन्न आधार पर सत्ता के तीन प्रकार का वर्णन करते हैं; पारंपरिक सत्ता इतिहास में निहित है, करिश्माई सत्ता व्यक्तित्व से और कानूनी–सत्ता अवैयक्तिक नियमों के एक समूह द्वारा स्थापित होता है। सरकार का अध्ययन करना सत्ता प्रयोग का अध्ययन करना है।

फूको ने सरकार की अवधारणा को वृहद किया और इसे नियोजित गतिविधियों का एक समूह माना, जिसका उद्देश्य लोगों के विचारों, कार्यों और भावनाओं को आकार देना था। उन्होंने 'सरकार' को बाहरी ताकत के रूप में नहीं देखा; बल्कि इसमें लोगों के 'स्व–संचालित' गतिविधियों को संलग्न बताया, जो अपने अन्तर्निहित सत्य के शासन द्वारा संचालित होते हैं (फूको, 2000)। वे सरकार शब्द के पुराने अर्थ के साथ सरकार की धारणा के व्यापक अर्थ का उपयोग करते हैं और शक्ति के रूपों प्रक्रियाओं के वस्तुकरण के बीच घनिष्ठ संबंध को स्थापित करते हैं। जबकि वर्तमान समय में सरकार शब्द का सीधा तात्पर्य राजनीति से है, फूको यह साबित करते हैं कि 18 वीं शताब्दी तक सरकार की समस्या को सामान्य समझा जाता था। सरकार न केवल राजनीतिक, बल्कि दार्शनिक, धार्मिक,

चिकित्सा और शैक्षणिक सन्दर्भों में भी प्रयोग हुआ है। राज्य या प्रशासन के प्रबंधन से इतर, "सरकार" ने आत्म–नियंत्रण, परिवार एवं बच्चों के लिए मार्गदर्शन, घरेलू प्रबंधन, आत्मा के निर्देशन इत्यादि की समस्याओं को भी दर्शाया है। इसी कारण, फूको सरकार को व्यवहार या अधिक सटीक शब्दों में कहें तो "व्यवहार का व्यवहार" के रूप में परिभाषित करते हैं, इस तरह एक शब्द के रूप में सरकार का अर्थ "आत्म–नियंत्रण" से लेकर "दूसरों के नियंत्रण" तक होता है। फूको के अनुसार, सरकार का अध्ययन का एक स्पष्ट नैतिक आयाम है, 'यदि नैतिकता को अपने कार्यों के लिए खुद को जिम्मेदार मानने के प्रयास के रूप में समझा जाता है, या ऐसा प्रचलन जिसमें मानव अपने व्यवहार से खुद को स्वयं–संचालित करता है' (डीन, 1999:11)।

5.3 शासन

शासन सरकार की तुलना में एक व्यापक शब्द है। अपने व्यापक अर्थ में, यह उन विभिन्न तरीकों को संदर्भित करता है जिनसे सामाजिक जीवन समन्वित होता है। यूएनडीपी (2006) के अनुसार, "शासन को सारे स्तरों पर किसी देश के मामलों का प्रबंधन करने के लिए आर्थिक, राजनीतिक और प्रशासनिक प्राधिकार के रूप में देखा जा सकता है। इसमें तंत्र, प्रक्रियाएँ और संस्थान शामिल हैं, जिसके जरिये नागरिक और समूह अपने हितों, कानूनी अधिकारों का उपयोग, दायित्वों को पूरा करने के साथ–साथ मतभेदों के बीच मध्यस्थता होती है। विश्व बैंक (1992) ने शासन को "उन परंपराओं और संस्थानों के रूप में परिभाषित किया है जिनके द्वारा किसी देश में जन हित के लिए अधिकार का प्रयोग किया जाता है। इसमें शामिल हैं:

(i) वह प्रक्रिया जिसके द्वारा सत्तासीन लोगों का चयन, निगरानी और प्रतिस्थापन किया जाता है,

(ii) संसाधनों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने और मजबूत नीतियों को लागू करने की सरकारी की क्षमता और

(iii) आर्थिक और सामाजिक सहभागिता को संचालित करने वाले संस्थानों के प्रति नागरिकों और राज्य का सम्मान।

शासन प्रणाली सिद्धांतों पर टिकी होती है जिसमें शामिल हैं: पारदर्शिता, जिम्मेदारी, जवाबदेही, भागीदारी और लोगों की जरूरतों के प्रति जवाबदेही। प्रभावी शासन न केवल सरकारी संस्थानों के सुधार, बल्कि सेवाओं के कुशल वितरण में बाजार तंत्र की संभावित भूमिका के तर्क का साथ देती है। निजी क्षेत्र और नागरिक समाज राजनीतिक संस्थानों की सीमा को संकुचित करती है। सुशासन यह सुनिश्चित करता है कि राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक प्राथमिकताएँ समाज में व्यापक सर्वसम्मति पर आधारित हों और विकास संसाधनों के आवंटन पर निर्णय लेने में सबसे गरीब और सबसे कमजोर लोगों की आवाज सुनी जाए। शासन के तीन मुख्य घटक हैं: आर्थिक, राजनीतिक और प्रशासनिक। आर्थिक शासन में निर्णय लेने की प्रक्रिया शामिल होती है जो किसी देश की आर्थिक गतिविधियों और अन्य अर्थव्यवस्थाओं के साथ उसके संबंधों को प्रभावित करती है। यह स्पष्ट रूप से समता, गरीबी और जीवन की गुणवत्ता के लिए परमावश्यक है। राजनीतिक शासन नीति निर्माण के लिए निर्णय लेने की प्रक्रिया है। नौकरशाही शासन नीति कार्यान्वयन की प्रणाली है।

तीनों को शामिल करते हुए, सुशासन उन प्रक्रियाओं और संरचनाओं को परिभाषित करता है जो राजनीतिक और सामाजिक–आर्थिक संबंधों को जोड़ते हैं। शासन राज्य को शामिल

करता है, लेकिन यह निजी क्षेत्र और नागरिक समाज संगठनों को शामिल कर राज्य से वृहत हो जाता है।

शासन एक ऐसी व्यवस्था का सूचक है जिसके द्वारा एक संगठन या समूह निर्देशित और प्रबंधित किया जाता है, जबकि शासन की अवधारणा से इतर सरकार राष्ट्र के एक औपचारिक राष्ट्र राज्यों (कुलफील्ड और होल्ट, 2012) को दर्शाता है। शासन को समाज और राज्य को जोड़ने वाली व्यवस्था के रूप में भी परिभाषित किया जाता है, जहां सार्वजनिक मामलों, कुशल उपयोग और समानता और नीति निर्माण द्वारा समाज की जरूरतों की पूर्ति कर मूल संसाधनों के विभाजन से संबंधित मुद्दों को ढूँढकर नियोजित किया जाता है। ऐसा शासन के अभिकरणों को सशक्त बनाकर और संक्षिप्त और लंबे समय में सुशासन को बढ़ावा देने वाले तंत्र स्थापित करने में उनकी भूमिकाओं और प्राथमिकताओं को परिभाषित कर किया जाता है (स्टोकर, 1998)। नव–उदारवाद की व्यापक रूपरेखा के कारण शासन के विचार पर जोर दिया गया जहाँ राज्य की भूमिका पर पुनर्विचार किया जा रहा है। राज्य के मुख्य कार्यों का निजीकरण किया गया और अधिक प्रभावी समस्या–समाधान तंत्र बनाने के लिए सार्वजनिक निजी भागीदारी का विचार पेश किया गया। शासन को समाज संचालन में केंद्र सरकार की क्षमता में गिरावट से जोड़ दिया गया। स्टोकर के अनुसार (1998:17), शासन का तात्पर्य 'उन कार्यप्रणालियों के उद्भव से है जिसमें सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के बीच की सीमाएँ धुंधली हो गई हैं'। पियरे और पीटर्स (2000: 83–91) का तर्क है कि राज्य अपनी निर्देशन की क्षमता खो रहा है क्योंकि नियंत्रण क्षेत्रीय से अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में उर्ध्वमुख (upward), क्षेत्रों से होते हुए अविकसित इलाकों में अधोमुख (downward) की ओर; और अंतर्राष्ट्रीय निगमों, गैर–सरकारी संगठनों और अन्य निजी या अर्ध–निजी निकायों के लिए बहिर्मुखी है। स्टोकर (1998:26) मानते हैं कि शासन 'अतीत से अतीव दूरी' को दिखाता है, 'बड़ी सरकार' (पियरे और पीटर्स, 2000:25) के युग में 'मजबूत राज्य' था, फिर समान रूप से शासन का उग्र रूप सामाजिक अभिकरणों (स्काउट और जॉर्डन, 2005) का आत्म–आयोजन और समन्वय है। मूल रूप से, ये सम्बन्धन केवल सरकारी नीति, बल्कि सरकार के कार्यप्रणाली को भी प्रभावित करते हैं' (स्टोकर, 1998:23)। वे इस अर्थ में स्वयं को 'व्यवस्थित' कर रहे हैं कि वे सक्रिय रूप से सरकारी हस्तक्षेप का विरोध करते हैं (रोड्स, 2000:61)। ओस्बोर्न और गेबलर (1992) के लोकप्रिय अंतर को देखते हुए, 'स्टीयरिंग' (नीति लक्ष्यों को निर्धारित करना) और 'रोइंग' (उपकरणों के चयन और उपयोग के माध्यम से उन लक्ष्यों को वितरित करना) शासन नीति निर्धारण भी करती है और लागू भी करती है।

शासन की अवधारणा ने नए समूहों को नीति निर्माण में शामिल होने की शक्ति दी; हालाँकि ये नए समूह पूरी आबादी के प्रतिनिधि नहीं थे। हैरिस (2007) के अनुसार, शासन में "नई राजनीति" ने गरीबों को सक्रिय तत्त्वों के रूप में बाहर रखा, भले ही संगठन उनके लिए काम करने का दावा करते रहे। 'उत्तर–वाशिंगटन सहमति' में निर्धारित शासन के मुद्दों में निजीकरण, विकेंद्रीकरण, नागरिक समाज की भागीदारी और सामुदायिक भागीदारी शामिल है। शासन का मुद्दा उदारीकरण की केंद्रीय समस्या का समाधान करता है। यह राज्य की गतिविधियों की संभावनाओं को कम करने और निजी क्षेत्र या नागरिक समाज की गतिविधियों को विकसित किया, हालाँकि शासन की जरूरत तब भी थी। उदाहरण के लिए, हैरिस बताते हैं कि समकालीन शासन एजेंडा शहरी गरीबों की निरंतर समस्या से निपटने के लिए संसाधनों के पुनर्वितरण माध्यम से नहीं, बल्कि विकेंद्रीकरण और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से उन्हें "सशक्त" बनाने का प्रस्ताव रखता है। वे बताते हैं कि 'शासन' के विचार से वास्तव में सत्ता और संसाधनों का समान वितरण नहीं हुआ है। इसके बजाय सत्ता कुछ समूहों (आमतौर पर मध्यम वर्ग की पृष्ठभूमि के शिक्षित लोगों

तक) में केंद्रीकृत हो गई है जो 'गरीब' के लिए बोलते हैं। उन्होंने चेन्नई में वकालत करने वाले गैर सरकारी संगठनों का उदाहरण दिया, जिसका उद्देश्य झुग्गी निवासियों को नागरिक होने का एहसास कराना तो था (उदाहरण के लिए उन्हें विकेन्द्रीकृत शहरी सरकार में सम्पूर्ण रूप से भागीदारी के लिए सक्षम बनाना), लेकिन आवास के अधिकार और जीविका के संघर्षों में उनका समर्थन किए बिना।

शासन की अवधारणा 1980 के दशक के नवउदारवाद के "मजबूत" बनावट भारत में आर्थिक उदारीकरण से उत्पन्न हुई। वर्तमान में, अर्थव्यवस्था और समाज निर्माण में राज्य की जिम्मेदारी को संकुचित करने वाला यह विचार आगे नहीं बढ़ सका क्योंकि अंततः सफल बाजारू अर्थव्यवस्था को चलाने के लिए और सांस्थानिक परिस्थितियों की स्थापना के लिए राज्य की भूमिका महत्त्वपूर्ण है (हैरिस, 2007)।

5.4 शासकीयता

फूको के निबंध शासकीयता में तर्क है कि एक निश्चित मानसिकता, जिसे उन्होंने शासकीयता कहा, राजनीतिक विचार और कार्रवाई के सभी आधुनिक रूपों का सामान्य आधार बन गयी थी। इसका संबंध सरकार के 'कैसे' से है– शासन कैसे किया और सोचा जाता है। इसमें सरकार की गतिविधियाँ और प्रचलन शामिल हैं... शब्द 'शासन/मानसिकता' में शासन की प्रक्रियाओं और सरकार की मानसिकता दोनों को संदर्भित किया गया है – अर्थात् यह सोचकर कि शासन कैसे किया जाता है। यह एक कला (एक प्रचलन) और तार्किकता (सरकार के बारे में सोचने का एक तरीका) दोनों है (गॉर्डन, 1991)।

शासकीयता को फूको द्वारा आत्म–नियंत्रण के लिए "स्वायत्त" व्यक्ति की क्षमता का अध्ययन के रूप में देखा गया है और यह किस प्रकार कैसे यह राजनीतिक शासन और आर्थिक शोषण के रूपों से जुड़ा हुआ है। इस अवधारणा को शुरू करने में फूको ने शक्ति की अवधारणा को अनदेखा नहीं किया लेकिन यह 'एक क्रांतिकारी सैद्धांतिक बदलाव की वस्तु थी' (फूको, 1985:6)। शासकीयता की दृष्टि से, सरकार में एक निरंतरता होती है, जो राजनीतिक शासन से आत्म–नियंत्रण के रूपों के माध्यम से फैलती है, अर्थात् फूको के शब्दों में "स्व की तकनीकों" (फूको, 1988)। अब सरकार की धारणा का इस्तेमाल स्व की तकनीकों और वर्चस्व के तकनीकों के बीच संबंधों की जाँच के लिए किया जाता है (फूको, 1988)। शासकीयता में सरकार की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें एक स्पष्ट नैतिक जुड़ाव है जो स्व–नियंत्रण को जगाता है। शासकीयता में किसी व्यक्ति को कोई बाहरी शक्ति नियंत्रित नहीं करती।

जिन तरीकों से जनसंख्या को नियंत्रित किया जाता है, वे सरकार की चिंता का एक प्रमुख विषय है। राजनीतिक शक्ति की अवधारणा राज्य की गतिविधियों, प्राथमिकताओं और निर्णयों की तुलना में व्यापक और अधिक जटिल है। इसमें यह भी शामिल है कि कैसे विभिन्न समूह या ज्ञान के रूप और व्यक्तियों, परिवारों और समुदायों के जीवन को नियंत्रित एवं गठित करते हैं।

फूको (1977–78:144) ने "शासकीयता" को तीन तरीकों से समझाया –

I- संस्थानों, प्रक्रियाओं, विश्लेषणों और प्रतिबिंबों, गणनाओं, और रणनीति का एक मजबूत गठजोड़ जो इस विशिष्ट एवं जटिल शक्ति के इस्तेमाल को संभव बनाती है, जिसका लक्ष्य जनसंख्या है, राजनीतिक अर्थव्यवस्था इसके ज्ञान का प्रमुख रूप है, और सुरक्षा के विभिन्न तंत्र इसके प्रमुख तकनीकी उपकरण हैं।

II- प्रवृत्ति, बल की रेखा, जो लंबे समय तक, और पूरे पश्चिम में, लगातार अन्य सभी प्रकार की शक्ति जैसे कि संप्रभुता, अनुशासन, और इसी तरह की शक्तियों के प्रकार की ओर अग्रसर रही है – जिसे हम "सरकार" कह सकते हैं और जिसके कारण एक ओर विशिष्ट सरकारी तंत्रों की श्रृंखला का विकास हुआ है, और दूसरी ओर ज्ञान की एक कड़ी का विकास हुआ।

III- प्रक्रिया, या यों कहें, इस प्रक्रिया का परिणाम जिसके द्वारा मध्य युग के न्यायिक राज्य पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दियों में प्रशासनिक कानून बन गए, धीरे–धीरे उनका "सरकारीकरण" हो गया।

'गठजोड़' के संदर्भ में, फूको सरकार के बारे में बात करते हैं; सरकार की गतिविधियों या प्रचलनों या यहां तक कि 'सरकार का खेल' – एक कला है, जिसके द्वारा कुछ लोगों को दूसरों के शासन को सिखाया जाता है और जिससे कुछ खुद को शासित होने देते हैं। सरकारों के शासन और मानसिकता की प्रक्रियाओं को समझने की कोशिश ने नवउदारवाद के युग में प्रमुखता प्राप्त की क्योंकि सरकार की भूमिका का मूल्यांकन फिर से होने लगा। शासकीयता की धारणा के माध्यम से "राज्य का ह्रास" के लिए नव–उदारवादी मुहिम (एजेंडे) को सरकार की तरकीब के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। केनेसियनवाद का संकट और कल्याणकारी राज्य हस्तक्षेप के रूपों में कमी के कारण राज्य की नियंत्रण की शक्तियों में कमी आती है, जिससे राज्य खुद को पुनर्संगठित एवं पुनर्संरचित करता है, जिससे राज्य की नियामक क्षमता 'जिम्मेदारी' और 'तार्किकता' का प्रभार व्यक्तियों पर डाल दिया जाता है। नवउदारवाद में व्यक्ति विशेष और "विशिष्ट" मामलों और समस्याओं के समाधान में सक्रिय रूप से भाग लेने की संभावना के साथ सामूहिक "व्यक्तिगत" आपूर्ति और वांछित स्वायत्तता के लिए अधिक गुंजाइश है, जो पहले विशेष रूप से राज्य के अभिकरणों के अधीन माना जाता था। इसमें भागीदारी सुनिश्चित करने का एक मूल्य है: व्यक्तियों को स्वयं इन गतिविधियों और संभावित विफलता के लिए जिम्मेदारी निभानी होगी (बर्चेल्ल, 1993, 275–6)। राज्य से व्यक्ति एवं समूह के प्रति उत्तरदायित्व का स्थानांतरण सरकार से शासन के तरफ एक आंदोलन के रूप में देखा गया। इन दोनों प्रकार के शासन में शामिल प्रचलन शासकीयता के दायरे में आती हैं।

5.5 सरकार, शासन और शासकीयता के बीच अंतर

शासन और शासकीयता दोनों आधुनिक समाज में व्यक्तियों, संगठनों, प्रणालियों, राज्य और बड़े पैमाने पर समाज के संबंध में दिशा, निर्देश, शासन, संचालन आदि की समस्याओं का मूल्यांकन करते हैं। उन दोनों का राज्य से सीधा संबंध है हालांकि यह संबंध अलग परंपराओं एवं मुख्य क्षेत्रों से है। शासन विशेष रूप से राज्य या सरकार की भूमिका पर अंतरराष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय निकायों के प्रभाव की पड़ताल करता है और पारंपरिक रूप से राज्य के प्रमुख कार्यों एवं विभिन्न क्षेत्रों पर इन नए विन्यासों के दूरगामी निहितार्थ की पड़ताल करता है।

वर्तमान समकालीन भारत में विविध क्षेत्रों में ये नए विन्यास और बनावट स्पष्ट हैं। भारत ने 1990 के दशक में राजनीतिक और आर्थिक सुधारों की एक श्रृंखला के साथ उदारीकरण की शुरुआत की, जिसने व्यापार और घरेलू उत्पादन को निष्क्रिय कर दिया और स्थानीय रूप से निर्वाचित निकायों, नागरिक समाज के अभिनेताओं और सामान्य नागरिकों (गुप्ता और शिवरामकृष्णन 2012) को विकेंद्रीकृत शक्ति प्रदान की। राजनीतिक शक्ति का विचलन कई स्व–सहायता समूहों के विकास और लोगों की "भागीदारी" और "सशक्तिकरण" (सान्याल, 2009) के आधार पर नए विकासवादी मुद्दों पर हुआ।

शासन को एक समन्वय तंत्र के रूप में, "सरकार की एक नई शैली जो मिश्रित सार्वजनिक निजी निर्णय लेने वाले जाल में राज्य और गैर–राज्य अभिकारकों के बीच सहयोग और सहभागिता की एक बड़ी श्रेणी की विशेषता" देखा जा सकता है (मेन्ट्ज 1999, सीएफ शियावो, 2014:181)। यह परिभाषा अवधारणा की गुंजाइश को रेखांकित करते हुए, उदार नैतिकता को धूमिल करती है जो इस शासकीय 'मानसिकता' को जीवंत बनाती है। शासन की अवधारणा में फूकोवादी अवधारणा ने एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण के विकास में योगदान दिया है और शासन के अध्ययन यह बताता है कि कैसे सत्ता में पहले से मौजूद शासन व्यवस्था अक्सर कुछ प्रकार के हितधारकों की 'भागीदारी' का नेतृत्व करती है। सत्ता के संस्थागत रूपों की "वंशावली" हमें सरकार की 'मानसिकता', तरीकों की जांच करने की अनुमति देती है जो शासन की कल्पना, अवधारणा, प्रतिनिधित्व और ज्ञान के निकाय पर आधारित है, एवं इसके दायरे, मापदंड और विशेषताओं को परिभाषित करता है। सरकार के अध्ययन को सरकार के तीन ध्रुवों से पहचाना जाता हैः सरकार की एक "मानसिकता" के संज्ञानात्मक, तकनीकी और नैतिक तत्व, जो एक विशिष्ट शक्ति 'उपकरण डिस्पोजिट' को आकार देते हैं, अर्थात सत्य नियम (सामूहिक विमर्श जो सामाजिक वास्तविकता का निर्माण करते हैं), नियंत्रण (तकनीक, उपकरण, प्रथाओं), व्यक्तिपरकता के रूप (सामूहिक और व्यक्तिगत पहचान)। फूको संस्कृतिः शास्त्रीय सभ्यताओं में नागरिकता की अवधारणा से लेकर प्रारंभिक ईसाई देहाती मार्गदर्शन तक एक उदार सरकार की तर्कसंगतता जो समाज पर अपने उत्पादक 'कार्यों में सीमित' है जो "जीवन" शासन का लक्ष्य और उद्देश्य बन जाता है, यानी नव उदारवादी 'सरकार के रूपों के लिए एकाधिकार, जिसमें से सरकार के बिना शासन' एक घटक हिस्सा है जैसे शासन की वंशावली का पता लगाते है (फूको, 2005)।

नव–उदारवादी शासन की 'समालोचना' के लिए सरकारी दृष्टिकोण के समेकित मूल्य में तार्किकता के रूपों को समझने की क्षमता प्रत्येक शक्ति चित्रण में शासकीय मनोवृति से शुरू होकर इसमें निहित होने वाले कारकों में सरकार के इन रूपों का विश्लेषण करने में अन्तर्निहित है। इसका अर्थ है कि शक्ति को निर्धारित करने वाले तत्त्वों में उन्हें ही परिभाषित करने वाले विमर्श, तकनीक और नैतिकता शामिल हैं। किसी अवधारणा की आलोचकीय क्षमता इसमें निहित विखंडन और सवाल करने की क्षमता में समाहित हैं। इस संबंध में, मेरलिंगन का मानना है, "इस तरह के विश्लेषण का प्रभाव अपने स्वयं के स्पष्ट, सामान्य या प्राकृतिक चरित्र के राजनीतिक शासन को रोकना है, जो इसके संचालन के लिए आवश्यक है" (इत्यादि, 2006, शियावो, 2014:187)।

सरकारी दृष्टिकोण, सरकार के प्रतिमान के बिना शासन की अवधारणा का गंभीर रूप से विश्लेषण करने में मदद करता है और अपने राजनीतिक चरित्र का अनावरण करने यानी "सामाजिक व्यवस्था को एक बाहरी के बिना एक बंद सार्वभौमिक स्व–प्रसार प्रणाली के रूप में पुनः व्यवस्थित करने का प्रयास" में मदद करता है। (प्रोजोरोव, 2007: 39, सी.एफ. शियावो, 2014: 187)। यह महत्त्वपूर्ण है क्योंकि नव–उदारवादी प्रतिमान के संदर्भ में, 'शासन' राज्य की भागीदारी और सशक्तिकरण के नाम पर इसे गैर–जिम्मेदार बनाता है। यह गैर–जिम्मेदाराना रवैया अक्सर आबादी के उन वर्गों पर हानिकारक प्रभाव डालती है जो शक्ति और संसाधन से रहित हैं। शासन के मानसिकता को समझना भेदभावपूर्ण शासकीय प्रथाओं में बदलाव लाने का पहला कदम है।

बोध प्रश्न I

i) सरकार, शासन और शासकीयता के बीच क्या अंतर है?

.....

.....

.....

.....

.....

ii) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें:

a) फूको ने संस्थानों, प्रक्रियाओं, विश्लेषणों और प्रतिबिंबों, गणनाओं, और रणनीति द्वारा ..... के रूप में शासकीयता को परिभाषित किया।

b) शासकीयता के केंद्र में ..... है।

c) ..... , ... और ..... शासन के प्रमुख तत्त्व हैं।

d) सरकार के अध्ययन में, हम .....का अध्ययन करते हैं।

iii) 'सरकार' के अवधारणा का आलोचनात्मक समीक्षा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

5.6 सारांश

यह इकाई शासन की प्रक्रिया के विभिन्न तरीकों को प्रस्तुत करती है। इस इकाई के अंत तक आपको पता चल जाएगा कि सरकार आमतौर पर शासन के लिए संरचनाओं और प्रक्रियाओं को संदर्भित करती है, शासन का मतलब सरकार से दूर सत्ता का विकेंद्रीकरण और शासन की प्रक्रिया में अन्य अभिकारकों की भागीदारी है। शासकीयता 'सरकार की कला' है या सरकार और शासन दोनों को कैसे चलाया जाता है। शासन में अंतर अपने युग विशेष में विद्यमान आर्थिक सिद्धांतों और वास्तविकताओं से प्रभावित होता है। नव–उदारवादी प्रतिमान बहुत प्रभावशाली रहा है। हालांकि यह दावा खारिज हो चुका है कि मुक्त बाजार सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करेगा। इसलिए, यह मान्यता है कि किसी भी समग्र और न्यायसंगत विकास के लिए राज्य की सक्रिय भूमिका बहुत आवश्यकता है।

5.7 शब्दावली

बायोपॉलिटिक्स : बायोपॉलिटिक्स मिशेल फूको द्वारा प्रतिपादित सामाजिक सिद्धांतों का अवधारणा है, जिसके अंतर्गत रणनीतियों, तंत्रों एवं मानव जीवन प्रक्रियाओं (दौड़, प्रजनन, स्वास्थ्य, चिकित्सा, प्रजनन इत्यादि) का उल्लेख किया जाता है।

वंशावली : फूको ने वंशावली को "वर्तमान के इतिहास" के रूप में

परिभाषित किया, अर्थात, सरकार की तार्किकता के इतिहास का गंभीरता से पड़ताल करना। वर्तमान के अध्ययन के संबंध में वंशावली 'विधि' "निदान योग्य" है।

कीनेसियनवाद : कीनेसियन अर्थशास्त्र अर्थव्यवस्था में कुल खर्च और उत्पादन और मुद्रास्फीति पर इसके प्रभाव का एक आर्थिक सिद्धांत है। केनेसियन अर्थशास्त्र को 1930 के दशक में महामंदी को समझने की कोशिश में ब्रिटिश अर्थशास्त्री जॉन मेनार्ड केन्स ने विकसित किया था। कीन्स ने मांग को प्रोत्साहित करने और वैश्विक अर्थव्यवस्था को मंदी से बाहर निकालने के लिए सरकारी खर्चों को बढ़ाने और कम करों की वकालत की।

नव–उदारवाद : राष्ट्रों के बीच व्यापार को सरल बनाने वाली विचारधारा और नीति नमूना है। यह मुनाफे और दक्षता को बढ़ाने के लिए हमेशा सस्ता संसाधन खोजने के लिए माल, संसाधनों और उद्यमों की अबाध गति पर ध्यान देता है। मानव प्रगति के लिए निरंतर आर्थिक विकास, मुक्त बाजार के लिए संसाधनों का कुशल आवंटन, आर्थिक और सामाजिक मामलों में न्यूनतम राज्य हस्तक्षेप और व्यापार और पूंजी की स्वतंत्रता के लिए अपनी प्रतिबद्धता इसकी कुछ मुख्य विशेषताएं है।

वर्चस्व की तकनीकियाँ : वर्चस्व व्यक्तियों के आचरण और किसी प्रकार के हित के लिए जनता के वस्तुनिष्ठता की सोच से निर्धारित होता है।

5.7 उपयोगी पुस्तकें

Bevir, M. and Rhodes, R. 2003.Interpreting British Governance. London: Routledge.

Dean, M. 1999. Governmentality: Power and Rule in Modern Society, London: Sage.

Foucault, M. 1977-78. Security, Territory, Population: Lectures at the College De France, edited by Michel Senellart, Palgrave Macmillan: UK.

Gupta, Akhil, and Kalyanakrishnan Sivaramakrishnan. 2012. The State in India

after Liberalization. London: Routledge

5.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

i) सरकार आमतौर पर शासन के लिए संरचनाओं और प्रक्रियाओं को संदर्भित करती है, शासन का मतलब सरकार से दूर सत्ता के विकेंद्रीकरण और शासन की प्रक्रिया में अन्य अभिकारकों की भागीदारी है। शासकीयता 'सरकार की कला' है कि सरकार और शासन दोनों को कैसे चलाया जाता है।

ii) a) समन्वय

b) जनसंख्या का विनियमन

c) आर्थिक, राजनीतिक और प्रशासनिक

d) सत्ता

iii) शासन की अवधारणा यह सुनिश्चित करने के लिए सामने आई कि राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक प्राथमिकताएं समाज में व्यापक सहमति पर आधारित हैं और विकास संसाधनों के आवंटन पर निर्णय लेने में सबसे गरीब और सबसे कमजोर लोगों की आवाज सुनी जाती है। इसमें तंत्र, प्रक्रियाएं और संस्थान शामिल हैं, जिसके माध्यम से नागरिक और समूह अपने हितों को स्पष्ट करते हैं, अपने कानूनी अधिकारों का उपयोग करते हैं, अपने दायित्वों को पूरा करते हैं और अपने मतभेदों का मध्यस्थता करते हैं। हालाँकि, नए समूहों को शक्ति देने में कठिनाइयाँ उत्पन्न हुईं, शासन ने गरीबों को सक्रिय तत्त्वों के रूप में बाहर रखते हुए सत्ता और संसाधनों को सबमें बराबर वितरित नहीं किया।

संदर्भ सूची

Bevir, M. and Rhodes, R. 2003.Interpreting British Governance. London: Routledge.

Burchell, G. 1993. 'Liberal government and techniques of the self', in: Economy & Society, 22(3): 267-82.

Caulfield T & Hort K. (2012). Governance and stewardship in mixed health systems in low?and middle?income countries. In H. P. H. F. K. H. The Nossal Institute for Global Health (Ed.), Working paper series (Vol. 24).

Dean, M. 1999. Governmentality: Power and Rule in Modern Society, London: Sage.

English Oxford Living Dictionaries, available at https://en.oxforddictionaries.com/definition/govern, accessed on June 2, 2019.

Foucault, M. 1977-78. Security, Territory, Population: Lectures at the College De France, edited by Michel Senellart, Palgrave Macmillan: UK.

Foucault, M.2000. '"Omnes et Singulatim": Toward a Critique of Political

Reason', in Faubion, J.D. (Ed.), Power: The Essential Works of Foucault Volume 3, New York: The Free Press: 298-325.

Foucault, M.1988. 'Technologies of the Self' (A seminar with Michel Foucault at the University of Vermont, October 1982), in: L. H. Martin, H. Gutman, P. H.

Hutton (eds.), Technologies of the Self. A seminar with Michel Foucault, Amherst: University of Massachusetts Press.

Gordon, C. (1991). 'Governmental Rationality: An Introduction', in G Burchell et al, The Foucault Effect: Studies in Governmentality, University of Chicago Press: Chicago: 1, 28 and 34.

Gupta, Akhil, and Kalyanakrishnan Sivaramakrishnan. 2012. The State in India

after Liberalization. London: Routledge

Harriss, J. 2007. Antinomies of Empowerment: Observations on Civil Society, Politicsand Urban Governance in India, Economic and Political Weekly, Special Articles, June 30, 2007.

Hindess, Barry 1996: Discourses of Power. From Hobbes to Foucault. Oxford: Blackwell.

Osborne, D. and Gaebler, T. (1992) Re-inventing Government. Reading MA: Addison-Wesley

Peters, B. G. (2000) 'Government and Comparative Politics', in J. Pierre (ed.), Debating Governance.Oxford: Oxford University Press, pp. 36-53.

Pierre, J. and Peters, B. G. (2000) Governance, Politics and the State. Basingstoke: Macmillan.

Rhodes, R. A. W. 2000. 'Governance and Public Administration', in J. Pierre (ed.), Debating Governance.Oxford: Oxford University Press: 54-90.

Sanyal, Paromita. 2009. From credit to collective action: The role of microfinance

in promoting women's social capital and normative influence. American

Sociological Review 74 (4): 529-50.

Schout, A. and Jordan, A. 2005 'Coordinated European Governance: Self Organised or Centrally

Steered?'Public Administration, 83 (1), 201-20.

Schiavo, L, L. 2014. Governance, Civil Society, Governmentality. The 'Foucauldian Moment' in the Globalization Debate: Theoretical Perspectives, International Journal of Humanities and Social Science, 4 (13):181-197.

Stoker G. Governance as theory: five propositions. International social science journal, 50(155), 1998: 17?28

United Nations. 2006. Definition of basic concepts and terminologies in governanceand public administration. Committee of Experts on Public Administration Fifth session: New York.

World Bank. 1992. Governance and Development. World Bank Publication: Washington D.C

इकाई 6 अभिजन वर्ग, शासक वर्ग और जनसमूह*

इकाई की संरचना

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 परिभाषा : अभिजन बनाम समूह

6.2.1 अभिजनों के प्रकार

- शासक अभिजन
- आर्थिक अभिजन
- शक्तिशाली अभिजन

6.3 संस्कृति : अभिजन वर्ग की सामाजिक प्रस्थिति का एक चिन्हक

6.4 सामाजिक संजाल और ज्ञान : अभिजन वर्ग का संरक्षण

6.5 सामाजिक संस्थाएँ : अभिजनों का पुनरुत्पादन

6.6 सारांश

6.7 शब्दावली

6.8 उपयोगी पुस्तकें

6.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप :

- अभिजन वर्ग और जनसमूह के बीच के अंतर को समझ सकेंगे;
- विभिन्न प्रकार के अभिजन वर्गों का वर्णन कर सकेंगे;
- अभिजन वर्ग को बनाए रखने में संस्कृति, सामाजिक संजाल और ज्ञान की भूमिका का अन्वेषण कर सकेंगे; और
- अभिजन वर्ग के पुनरुत्पादन में सामाजिक संस्थाओं की भूमिका को समझा सकेंगे।

6.1 प्रस्तावना

इस पाठ्यक्रम की पिछली इकाई में हमने सरकार, शासन और शासकीयता को देखा। इस इकाई में हम अभिजन वर्ग, शासक वर्ग और जनसमूह की चर्चा करेंगे। हम अभिजन वर्ग और जनसमूह के बीच अंतर को इंगित करते हुए इस इकाई की शुरुआत करेंगे। इसके पश्चात् हम विभिन्न प्रकार के अभिजन वर्गों और अभिजन वर्ग को बनाए रखने में संस्कृति, सामाजिक संजाल और ज्ञान की भूमिका पर चर्चा करेंगे। तत्पश्चात हम अभिजन वर्ग के

* गीतांजली अत्री द्वारा लिखित।

पुनरुत्पादन में सामाजिक संस्थाओं की भूमिका की व्याख्या करेंगे। दुनिया का हर समाज मोटे तौर पर दो समूहों में विभाजित है। जिनमें से एक समूह, छोटा है परंतु फिर भी अधिकतम संसाधनों को नियंत्रित करता है और शक्ति के सामाजिक संबंधों में प्रभावी स्थान रखता है। ये अभिजन हैं। और अन्य, बहुसंख्यक है फिर भी कोई शक्ति नहीं रखते है। ये जनसमूह हैं। तदनुसार, जबकि 'अभिजन सिद्धांत' के प्रारंभिक विचारकों द्वारा जनसमूह को अक्षम और निष्क्रिय के रूप में समझा जाता है, इसके विपरीत अभिजनों को रचनात्मक और अपरिहार्य के रूप में देखा जाता है। यह समझ एक दो–स्तरीय योजना पर आधारित है – शासक अल्पसंख्यक बनाम शासित बहुसंख्यक।

यद्धपि अभिजन वर्ग समाज की विभिन्न कड़ियों से संबंधित हो सकता है, चाहे वह राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शिक्षा या यहां तक कि धर्म ही क्यों ना हो; वे किसी भी क्षेत्र में प्रभुत्व की स्थिति पर अधिकार बनाए रखते हैं। हालांकि, आधुनिकता के आगमन के साथ, सामाजिक संजाल और संस्थानों आदि जैसे अधिक से अधिक कारकों को अभिजन वर्ग के संरक्षण के दायरे में जोड़ा गया है। लेकिन यह कहा गया है कि अभिजन वर्ग प्रदत्त समूहों के रूप में ही सीमित नहीं है, बल्कि योग्यता के द्वारा इसमें अतिक्रमण किया जा सकता है। इस प्रकार, यह बहस और अधिक गतिशील बन जाती है।

6.2 परिभाषा : अभिजन बनाम जनसमूह

इस खंड में हम अभिजन वर्ग को परिभाषित करेंगे। अभिजनों या जनसमूह– इन दोनों की कोई एकवचनीय परिभाषा नहीं रही है – हालाँकि, इन दो अवधारणाओं के विषय में विभिन्न दृष्टिकोणों के लिए जो सामान्य रहता है वह यह है कि एक को हमेशा दूसरे के पूरक के रूप में समझा जाता है। 'अभिजनवाद' के उत्कृष्ट विचारक गेटानो मोस्का और रॉबर्ट मिशेल एक संरचनात्मक परिप्रेक्ष्य में अपने तर्क प्रस्तुत करते हैं। उनके अनुसार, शासक वर्ग की संख्यात्मक लघुता उनके पक्ष में काम करती है क्योंकि वे अनगिनत बहुसंख्यकों की तुलना में कार्यों और हितों के समन्वय के लिए व्यवस्थित करने में आसान होते हैं, जो कि उनकी अक्षमता के कारण व्यवस्थित करना बहुत कठिन है।

लेकिन अभिजन वर्ग का सिद्धांत उनके पूर्ववर्ती विलफ्रेडो पेरेटोकी विद्वत्ता से सबसे महत्वपूर्ण रूप से ग्रहण करता है। उनकी पुस्तक *द माइंड एंड सोसाइटी* (1935), अभिजन वर्ग के भीतर मौजूद भेदों के वर्णन द्वारा इस बहस में योगदान करती है। इसमें वे कहते हैं कि, सार्वभौमिक रूप से, विभिन्न समाज ना केवल उनके जन्मजात गुणों के कारण अभिजन वर्ग और जनसमूह के बीच विभाजित है, अपितु अभिजनों की श्रेणी भी इससे और आगे बढ़कर शासक और गैर–शासक अभिजन वर्ग के बीच विभाजित अंतर है। उन्होंने इस शासक अभिजन, गैर–शासक अभिजन और गैर–अभिजन के बीच त्रिपक्षीय पर इस मान्यता को आधार बनाया कि किसी भी समाज में व्यक्ति अपने गुणों में असमान होते हैं, तथापि नए सदस्य उनकी अपनी उपलब्धियों और योग्यता के आधार पर जनसमूह में से अपना मार्ग बना कर अभिजन वर्ग के स्तर में शामिल हो सकते हैं।

अपने तर्कों को आगे बढ़ाते हुए, सी. राइट मिल्स अपनी पुस्तक *इन द पावर इलीट* (1956) में अमरीकी शक्ति संरचना में बहस के लिए शर्तें तय कीं। वह अमेरिकी समाज को तीन स्तरों में व्यवस्थित करते हैं– शक्तिशाली अभिजन, जिसमें सैन्य, निगमित और राजनीतिक नेतृत्व निहित है; मध्यम स्तर जिसमें स्थानीय या क्षेत्रीय अभिजन, कांग्रेस के सदस्य और अन्य संगठित समूह शामिल हैं; और असंगठित जनसमूह। अभिजन वर्ग के व्यक्तियों में सामाजिक आधार समान होता है और वे गैर–अभिजन वर्ग या जनसमूह से गुणात्मक परिवर्तन प्राप्त करने के लिए अपने संबंध बनाए रखते हैं। मिल्स के लिए, अभिजन एक

जोड़नेवाली इकाई की तरह काम करते हैं, जिसमें वे एक दूसरे को स्वीकार करते हैं और समझते हैं, और यहां तक कि एक जैसा सोचते हैं। इसलिए, मिल्स के अनुसार सत्ता संस्थानों में निहित होती है, न कि व्यक्तियों के में। यहां तक कि जनसमूह अपनी प्रतिभाओं के द्वारा प्रेरित होकर ऐसी संस्थाओं में शामिल हो सकती है, जब तक कि यह संस्था की शक्ति को अस्थिर नहीं करती है। पेरेटो और मिल्स से विचारधारा ने जी. विलियम डोमहॉफ में एक और प्रस्तावक को देखा। उनका कार्य *हू रिअली रूल्स?* (1978) अभिजन संस्थानों के भीतर गतिशीलता के तंत्र के रूप में अभिजन संस्थानों में शिक्षा और सदस्यता के द्वारा सह–चयन पर चर्चा करता है।

इस प्रकार, प्रारंभ में अभिजन और जनसमूह को सामाजिक वर्णक्रम के दो दूरस्थ छोर के रूप में समझा जाता था, क्रमशः इन्हें बिना किसी निश्चित सीमाओं के घुलने–मिलने वाली श्रेणियों के रूप में देखा गया। जबकि जनसमूह शासित और असंगठित बहुसंख्य बना हुआ है, व्यक्तिगत योग्यता को अभिजन स्तर में उनकी गतिशीलता की संभावनाओं के केंद्र में रखा गया है।

सोचें और करें 1

उन विचारकों की, उनके योगदान के वर्षों के साथ एक सूची बनाएं जिन्होंने अभिजात्य वर्ग बनाम जनसमूह के प्रत्येक पहलुओं पर बहस में योगदान दिया और देखें कि किस प्रकार इतिहास के विभिन्न पहलुओं पर बहस आगे बढ़ती है।

बोध प्रश्न 1

i) पेरेटो के अनुसार, अभिजन वर्ग के भीतर दो विभिन्न वर्ग कौन से हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

ii) शक्तिशाली अभिजन किस प्रकार गैर–अभिजनों से गुणात्मक परिवर्तन प्राप्त करते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

iii) अभिजन वर्ग के भीतर जनसमूह की गतिशीलता के केंद्र में क्या होता है ?

–कड़ी मेहनत –समर्पण

–पैत्रिक स्थिति –योग्यता

6.2.1 अभिजनों के प्रकार

द सोशल साइंसेज इनसाइक्लोपीडिया के अनुसार, अभिजनों की प्रकृति को पारंपरिक रूप से मुट्ठी भर लोगों के समूह के रूप में समझा जाता था, जो इन्हें कुछ विशेष प्रतिभाओं का स्वामित्व होने, किसी महत्वपूर्ण आवश्यकता को पूरा करने या कुछ ऐतिहासिक ध्येय (मिशन) को पूरा करने के गुण के कारण समाज के बाकी हिस्सों से पृथक करता हैं। हालाँकि, नया दृष्टिकोण उन्हें समाज के किसी भी वर्ग के अभिशासन में प्रभावशाली हस्तियों के रूप में देखता है, चाहे वह संस्थागत ढांचा हो, परिवर्तित–स्थानीय समुदाय हो या फिर भौगोलिक क्षेत्र। और बोलचाल के ढंग से अभिजन वर्ग आमतौर पर नेताओं, प्रभावकों या निर्णय निर्माताओं के समान होते हैं।

वर्तमान में, आधुनिकता के आगमन के कारण, न केवल समाज के विभिन्न क्षेत्रों में, बल्कि शक्ति के विभेदित स्तर के साथ भी अभिजन वर्ग का उदय हुआ। इस प्रकार, समाज में लगभग किसी भी और हर क्षेत्र में कुलीन व्यक्ति हो सकते हैं– नौकरशाही अभिजन वर्ग, विधायिक अभिजन वर्ग, कुलीनतंत्र का अभिजन वर्ग, मीडिया अभिजन वर्ग, शैक्षिक अभिजन वर्ग, वित्तीय अभिजन वर्ग, आरोपित अभिजन वर्ग या साख वाले अभिजन वर्ग। अतः इस खंड में हम, और अधिक विस्तार से, तीन अलग–अलग प्रकार के अभिजनों का अन्वेषण करेंगे, जो मूल रूप से व्यापक श्रेणियां हैं, जिससे ये विभिन्न प्रकार के उल्लेखित अभिजन वर्ग सम्बंधित है।

1. शासक अभिजन

यह श्रेणी सर्वप्रथम पेरेटो द्वारा प्रस्तावित की गयी थी। उनके अनुसार, हालांकि कुछ व्यक्ति अपनी क्षमताओं में श्रेष्ठ होते हैं, और दूसरे अपने गुणों के कारण उनसे हीन रह जाते हैं – इस प्रकार, वे गैर–अभिजन वर्ग हैं। श्रेष्ठ व्यक्ति उसके लिए "अभिजन" हैं। वे समाज में इनके कार्यों के आधार पर इन अभिजन वर्गों को दो शाखाओं में विभाजित करतें है– शासी या शासक वर्ग; और गैर–शासी अभिजन वर्ग। जैसा कि नाम से पता चलता है, शासी अभिजन वर्ग, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, सरकार और इसकी राजनीतिक प्रक्रियाओं के कामकाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अब, शासक अभिजन वर्ग दो प्रकार के हैं – लोमड़ी और शेर। लोमड़ियाँ वे हैं जो धूर्तता, छल और धोखेबाजी के गुणों के द्वारा शासन करते है। दूसरी ओर, शेर वे हैं जो सजातीयता, छोटे नौकरशाहों, स्थापित मानदंडों और केंद्रीकृत प्रक्रियाओं के माध्यम से शासन करते हैं। इस प्रकार, शेर लोमड़ियों की अपेक्षा तुलनात्मक रूप से अधिक रूढ़िवादी हैं। आपके लिए, इन द्विभाजन को बेहतर ढंग से समझने के लिए, एक चित्र नीचे दिया गया है।

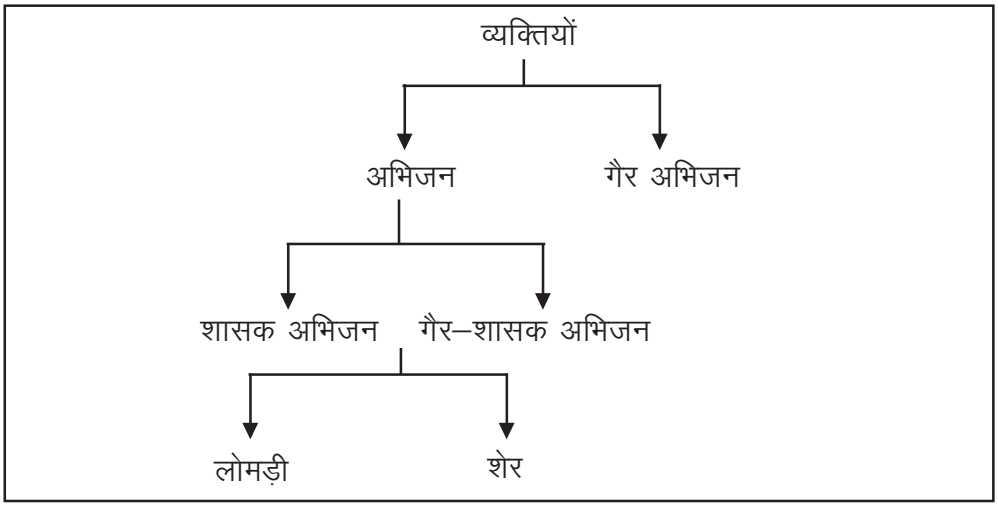

पेरेटो के अनुसार, इतिहास शेरों और लोमड़ियों के बीच सत्ता का पेंडुलम की भांति हस्तांतरण है। इसे समझाने के लिए, उन्होंने "अभिजनों के परिसंचरण" के विचार को प्रस्तावित किया। इसमें उन्होंने दो तरीके सुझाए जिसमें किसी समाज विशेष में शासक अभिजन वर्ग गतिशील रहते हैं, न कि स्थिर, जिसमें एक का क्षय दूसरे के उदय का मार्ग प्रशस्त करता है। सर्वप्रथम, उनके अनुसार, यह समाज के अभिजन और गैर–अभिजन वर्ग के बीच व्यक्तियों का परिसंचरण है। शासक अभिजन वर्ग को तब प्रतिस्थापित किया जाता है, जब गैर–शासक वर्ग के लोग इनके वर्ग में घुसपैठ करना शुरू कर देते हैं .. दूसरा, अभिजनों का परिसंचरण अभिजातों के एक समूह का दुसरे समूह द्वारा प्रतिस्थापन सुनिश्चित कर सकता है, जब तक बाद के (परवर्ती) समूह अपने गुणों पर अधिकार कर वृद्धि करें, जो कि शासक अभिजन वर्ग के लिए आधारभूत विशेषताएं हैं तब तक पूर्ववर्ती के समूह में इन विशेषताओं के पतन के संकेत दिखाई देने लगते है। इस प्रकार, शीर्ष पर शासक वर्ग के साथ अभिजनतंत्र नहीं टिकता हैं।

2 आर्थिक अभिजन वर्ग

जेम्स बर्नहैम ने अभिजनवाद को परिभाषित करने के लिए आर्थिक दृष्टिकोण को अपनाया, जिसमें शक्ति को पहचान के एक माध्यम के रूप में देखा गया है कि कौन अभिजन वर्ग है और कौन नहीं। इस गतिविधि में, अभिजन वर्ग उत्पादन और वितरण के साधनों पर अपने नियंत्रण के स्तर के अनुसार अपनी शक्ति का प्रयोग करते हैं। यह शक्ति उन्हें सामाजिक वर्णक्रम के दूसरे छोर पर स्थित, उत्पादन या वितरण के साधनों तक पहुंच न रखने वाले लोगों की तुलना में समाज में प्रभावशाली स्थान देती है। इस समझ के अनुसार, यह पता लगाने का सबसे आसन तरीका कि समाज का प्रभावी अभिजन वर्ग या शासक समूह कौन है, यह अन्वेषण करना है कि किस समूह को अधिकतम आय प्राप्त होती है। समाज में राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने के लिए, पहले व्यक्ति के पास आर्थिक शक्ति होनी चाहिए, क्योंकि राजनीतिक शक्ति भी आर्थिक नियंत्रण होने से प्रवाहित होती है। इस मामले की पुष्टि करने के लिए, वे पूंजीवाद का एक उदाहरण प्रस्तुत करतें है। इसमें, वे तर्क देतें है कि पूंजीवाद धीरे–धीरे एक आर्थिक और राजनीतिक प्रणाली द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया जाएगा, जिसे प्रबंधकीय अभिजन वर्ग द्वारा चलाया जाएगा, क्योंकि पूंजीपतियों ने अपने व्यवसाय का नियंत्रण उन लोगों को हस्तांतरित कर दिया है जो पेशेवर प्रबंधकों को रखने की क्षमता रखते है। यह एक प्रबंधकीय क्रांति के परिणामस्वरूप हो सकता है, जिसमें राज्य के समर्थन प्रबंधक और नौकरशाह के कारण विनिमय योग्य हो जाएगा।

3 शक्तिशाली अभिजन

बर्नहैम द्वारा व्याख्यायित अभिजन वर्ग की शक्ति के विशुद्ध आर्थिक आधार को आगे बढ़ाते हुए, सी. राइट मिल्स ने आगे जोड़ते हुए कहा कि यह केवल आर्थिक शक्ति नहीं है, बल्कि इसका सामाजिक प्रतिपक्ष भी है, जो एक दिए गए समाज में अभिजन वर्ग का आधार बनाने के लिए एक साथ जुड़ते हैं। अतः, उनके लिए शक्तिशाली अभिजन वे हैं जिन्होंने संस्थानों में सर्वोच्च पदों पर कब्जा किया हुआ हैं। वही शक्तिशाली अभिजन वर्ग राजनीतिक क्षेत्र या सरकार में भी सत्ता के प्रमुख पदों पर सफलतापूर्वक अधिकार कर लेते है। यहां, मिल्स के अनुसार, संस्थान सामरिक पदानुक्रम हैं, जिसमें वैधता के स्रोतों पर अधिकार करने की तुलना में अभिजनवाद पर अधिकार करने के लिए शक्ति और नियम महत्वपूर्ण हैं। इस प्रकार, उनके संस्थागत शक्ति दृष्टिकोण के अनुसार, शक्ति का स्रोत किसी व्यक्ति या विशेष वर्ग के पास नहीं, अपितु संस्था के पास निहित है।

एक संस्था से प्रवाहित होने वाली शक्ति, समकालीन समाज में अभिजन वर्ग के स्तर,

स्थिति, प्रभाव और अधिकार निर्धारित करती है। उस शक्ति के साथ जो कि एक संस्थान कुलीन वर्ग को प्रदान करती है, वे दूसरों की भूमिका निर्धारित करने की स्थिति में आ जाते हैं – इन दूसरों में मध्य वर्ग और जनसमूह आते हैं। इस प्रकार, मिल्स ने सुझाव दिया कि यह जन्मजात लक्षण थे जो एक व्यक्ति को एक अभिजन बनाते हैं, बल्कि यह वह संस्था है जिसके साथ वह संबंधित है। अमेरिकी समाज की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि निगम, सैन्य और सरकार तीन ऐसे ही अभिजन संस्थान हैं। इन अभिजन संस्थानों के निर्णय निर्माता एक दूसरे की अभिजनसमूह को बनाए रखने और मजबूत करने के लिए एक दूसरे के साथ सामंजस्य के साथ काम करते हैं। अन्य समाजशास्त्री जी. विलियम डोमहॉफ के अभिजन वर्ग पर उनके काम को समझने के लिए कृपया नीचे दिए गए बॉक्स को पढ़ें।

बॉक्स 1. हू *रिअली रूल्स?* (1978)

डोमहॉफ के अनुसार, व्यावसायिक अभिजन वर्ग दोनों राष्ट्रीय और स्थानीय स्तरों पर भली प्रकार सुनियोजित हैं। उनके पास प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तरीकों से प्रभाव डालने की क्षमता है। वे विशेष रूप से द्वितीय विश्व युद्ध के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका की पुनर्विकास नीतियों और शीर्ष व्यवसायों और उनकी सरकार के बीच संबंध के मामले की व्याख्या करतें है। इसमें, वे तर्क देते हैं कि सरकार उच्च वर्ग के हाथों में एक उपकरण है, जो कॉर्पोरेट अर्थव्यवस्था, मीडिया और संचार और नीति नियोजन संगठनों को नियंत्रित करता है। इस प्रकार, वे उच्च वर्ग के व्यापारी अभिजन वर्ग के साथ सत्तारूढ़ अभिजन वर्ग को समान मानते है,

उनके अनुसार "उच्च" बने रहना ही "शासन" में बने रहना है। डोमहॉफ शक्ति का एक त्रिपक्षीय विभाजन प्रदान करते है – प्रणालीगत, संरचनात्मक और स्थितिजन्य के रूप में। जो संस्थागत नीतियों से लाभान्वित होता है, उनके पास प्रणालीगत शक्तियां होती हैं, जो महत्वपूर्ण संस्थागत पदों को नियंत्रित करते है, उनके पास संरचनात्मक शक्ति होती है, और जो निर्णायक विवादों में जीततें है, उनमें स्थितिजन्य शक्ति सबसे अधिक होती है। ये तीन आयाम शक्ति के वर्ग, संस्थागत और निर्णायक आयामों का प्रतिनिधित्व करते हैं। सत्ता के तीन आयाम नीति निर्माण के तीन अनुवर्ती स्तरों की ओर संकेत करते हैं, जिसमें, प्रणालीगत शक्ति व्यापक मुद्दों पर प्रभुत्व रखती है, संरचनात्मक शक्ति ठोस नीति प्रस्तावों की ओर ले जाती है, और स्थितिजन्य शक्तियां विशिष्ट नीतियों के विवरणों का समाधान करती हैं।

बोध प्रश्नों के उत्तर 2

i) पेरेटो के अनुसार शासी या शासक अभिजन वर्ग के भीतर कौन सी दो श्रेणियां हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ii) अभिजनों के संचलन के विचार को किसने प्रतिपादित किया? और उनका इससे क्या अभिप्राय है?

– विलफ्रेडो पेरेटो – सी. राइट मिल्स

– जी. विलियम डोमहॉफ – जेम्स बर्नहैम

.....

.....

.....

iii) पूंजीवाद कैसे प्रबंधकीय अभिजनों के लिए मार्ग प्रशस्त करता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

iv) शक्तिशाली अभिजन कौन हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6.3 संस्कृति : अभिजन वर्ग की सामाजिक स्थिति का एक चिन्हक

पियरे बॉर्दियू अपने उत्कृष्ट कार्य *डिस्टिंक्शन* (1984) के माध्यम से, संस्कृति और इसकी विशेषताओं का अभिजनवाद के विचार के आधार के रूप में समीक्षा करने वाले प्रथम व्यक्ति थे। उनके अनुसार, सांस्कृतिक विस्थापन, अभिजन वर्ग की प्रस्थिति के सार्थक चिन्हक हैं। संस्कृति केवल एक व्यक्ति की सामाजिक प्रस्थिति को दर्शाने का साधन मात्र नहीं है, अपितु यह वास्तव में इसे बनाने में व्यक्ति की मदद भी करता है। इस संबंध में संस्कृति, दो कार्य करती है – सबसे पहला, यह एक व्यक्ति को अपनी पहचान बनाने में मदद करती है; और दूसरा, यह एक सीमा बनाती है, जो स्वयं के और दूसरों के निर्माण की ओर ले जाने का नेतृत्व करती है ।

सोचे और करें 2

अपने माता–पिता / दादा–दादी या परिवार के अन्य बुजुर्गों से बात करें और सांस्कृतिक क्षेत्र के विशिष्ट लक्षणों की सूची तैयार करें, जिनसे आप संबंध रखते हैं। सांस्कृतिक क्षेत्र आपकी सामाजिक अवस्थिति – आपकी जाति, वर्ग, धर्म, जातीयता और यहां तक कि लिंग से भी आकार पाता है। यदि संभव हो तो केंद्र में अपने सह–शिक्षार्थियों के साथ अपनी सूची की तुलना करें और यह समझने की कोशिश करें कि आपकी सांस्कृतिक विशिष्टता दूसरों की तुलना में आपकी स्थिति को किस प्रकार प्रभावित करती है।

इस समझ के अनुसार, दिए गए समाज में अभिजन वर्ग का निर्माण "सांस्कृतिक पदानुक्रम" पर निर्भर करता है। अभिजन अपने वर्ग, जातीयता, धर्म और लैंगिक सहित अपने सामाजिक और सांस्कृतिक स्थानों का उपयोग करते हैं, ताकि उनके मूल्यों और जीवन शैली का एक विशेष आस्वादन विकसित हो सके जो उन्हें गैर–अभिजन वर्ग से अलग करता है। इस विचार का अधिकांश भाग बॉर्दियू के "सांस्कृतिक पूंजी" की अवधारणा पर आधारित है। यह इस बात पर जोर देता है कि जैसे आर्थिक पूंजी किसी व्यक्ति को आर्थिक रूप से सशक्त बनाती है और उसे एक आर्थिक अभिजन बनाती है, ठीक उसी तरह, संस्कृति जब पूंजी के रूप में देखी जाती है, तो वह व्यक्ति को दूसरों की तुलना में सांस्कृतिक रूप से अधिक सक्षम बनाती है। इसे देखते हुए, सांस्कृतिक पूंजी जीवन के अवसरों को प्रभावित करती है। यह किसी व्यक्ति की जीवन शैली, शिक्षा प्राप्ति, वैवाहिक चयन, कैरियर विकल्प और यहां तक कि सामान्य पसंद और नापसंद पर एक महत्वपूर्ण असर डालती है।

आइए इस कथन को पश्चिमी संदर्भ में संगीत के एक उदाहरण के माध्यम से समझते हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के माध्यम से, अभिजन वर्ग और जनसमूह की पसंद और नापसंद या रूचि के बीच बहुत अंतर नहीं था। बाद में, इस प्रवृत्ति में बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में एक तीव्र बदलाव देखा गया। स्वयं और जनसमूह के बीच एक अंतर बनाने के प्रयास में अभिजन वर्ग ने अच्छे संगीत जैसे शास्त्रीय और ओपेरा की अपनी रूचि को पसंद में परिवर्तित करना प्रारंभ कर दिया। वे निम्न बौद्धिक जनसमूह से बिलकुल विपरीत उच्च सांस्कृतिक और बौद्धिक रूचि वाले वर्ग बन गए। लेकिन इस प्रवृत्ति में फिर से बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के दौरान एक बदलाव देखा गया, जब सांस्कृतिक अभिजन वर्ग की रूचि शास्त्रीय, जैज़, विश्व संगीत और हिप हॉप का मिश्रण अधिक हो गई।

अस्पष्टता का यह उभरता रुझान, जैसा कि अभिजन वर्ग के संगीत की रूचि के उदाहरण द्वारा दिखाया गया है, उनके और जनसमूह के बीच की सीमाओं को धूमिल करने की ओर संकेत करता है, जिसमें उनकी गैर–विशिष्ट सांस्कृतिक रूचि और जीवन के तरीकों को अपनाकर अभिजन वर्ग में सम्मिलित हो जाना जनसमूह के लिए कोई दूर की कौड़ी नहीं है।

बोध प्रश्न 3

i) अभिजन बनाम जनसमूह के विमर्श में संस्कृति के विचार को किसने प्रस्तावित किया?

.....

.....

.....

.....

.....

ii) अभिजनवाद को परिभाषित करने में संस्कृति द्वारा निभाई गई दो भूमिकाएं क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

iii) "सांस्कृतिक पूंजी" का बॉर्दियूवादी विचार क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

iv) अभिजन वर्ग और जनसमूह के बीच की सीमाएं कैसे बदल रही हैं? संगीत के उदाहरण के माध्यम से समझाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

6.4 सामाजिक संजाल और ज्ञानः अभिजन वर्ग का संरक्षण

जैसा कि प्राचीन ज्ञान बताता है, दूसरों के साथ संबंध संसाधनों का कार्य करते हैं। अभिजन वर्ग अल्पसंख्यक हो सकता है, लेकिन एक दूसरे के साथ उनके संबंधों या संजाल का घनत्व उनके सामूहिक हितों के लिए समन्वित कार्यों के उत्पादन में एक लंबा साथ निभाता है। इस प्रकार के सह–संबंध सूचनाओं के हस्तांतरण को सुगम बनाते हैं, जो उनके सामान्य अनुभवों के आधार पर समन्वित कार्यों के उत्पादन में मदद करता है।

सामाजिक संजाल मूल रूप से एक व्यक्ति को सहभागित जीवन के अवसरों और हितों के साथ समुदाय से जोड़ने वाले संबंधों की संरचना है। चाहे वह व्यक्ति हों, संगठन हों या राष्ट्र हों, सूक्ष्म या वृहद स्तर पर सभी सामाजिक कार्यकर्ता दूसरों के सुझाव, सलाह, सूचना या संसाधनों को साँझा करके, समर्थन और आलोचनाओं के साथ अपने रोजमर्रा के व्यवहार का निर्माण करते हैं। किसी के सामाजिक संजाल के भीतर इस तरह की परस्पर क्रिया, उसके कार्यों, व्यवहार, विचारों और मान्यताओं को प्रभावित करती है; जो अभिजनवाद के गुणों को सदृढ़ करती है।

किसी भी समाज में व्यक्ति सामाजिक समन्वयात्मक होता हैं। वे न तो अपने अस्तित्व के लिए अपने सामाजिक संजाल पर पूरी तरह से निर्भर हैं, और न ही वे पूरी तरह से अप्रभावित या तर्कसंगत हैं। सामाजिक संजाल के केंद्र में सामाजिक कार्यकर्ताओं की एक दूसरे पर परस्पर–निर्भरता निहित होती है। उनकी परस्पर–क्रियाओं को समझकर उनकी संस्कृति, समुदाय, संस्था या समाज के संदर्भ को निकाला जा सकता है। लेकिन जिस तरह सांस्कृतिक, आर्थिक या स्वयम शक्तिशाली अभिजन वर्ग की स्थिति के मामले में भी, यहाँ तक कि अभिजन वर्ग के सामाजिक संजाल गतिशील रहते हैं, न कि स्थिर। ऐसे संजाल की संरचना और सदस्यता परिवर्तन के अधीन है और ऐसा तब होता है जब समाज के गैर अभिजन वर्ग के सदस्य ऊर्ध्वगामी गतिशीलता प्राप्त करते हैं।

अभिजन प्रस्थिति के संरक्षण में, ज्ञान और विचारधारा सामाजिक संजाल के सममूल्य भूमिका निभाते हैं। अब यह महत्व ग्रामसी के "हेजिमनी" के विचार के बाद, अभिजनवाद पर अध्ययन में ज्ञान से जुड़ा था। एंटोनियो ग्रामसी की पुस्तक *सलेक्शन्स फ्रॉम दा प्रिजन नोटबुक्स* (1971) यह प्रस्तावित करती है कि शासक वर्ग बल द्वारा शासन नहीं करता है; बल्कि वे अपने सांस्कृतिक ज्ञान के नैतिक सद्‌गुण के आधार पर शासन करते हैं। उनके अनुसार, वे अपने सांस्कृतिक ज्ञान का उपयोग शासक के हितों की आड़ में अपने हितों को नियंत्रित करने के लिए एक उपकरण के रूप में करते हैं।

सांस्कृतिक ज्ञान से सशक्त वे शासितों को शासकों के मूल्यों को साँझा करने या अपनाने के लिए सहमत करते हैं। अतः उदाहरण के लिए, अभिजन वर्ग अपने सांस्कृतिक ज्ञान के उपयोग द्वारा एक विशेष राजनीतिक विचारधारा की सदस्यता लेने के लिए जनसमूह को संगठित करते हैं। अभी तक अन्य स्तर पर, अभिजन वर्ग के समतुल्य बुद्धिजीवियों के उदय होने के साथ ही, ज्ञान स्वयम ही सामाजिक स्थिति का संकेतक बन जाता है। उनकी व्यावसायिकता और सामाजिक–सांस्कृतिक पूंजी के साथ–साथ उनकी योग्यता उनकी सामाजिक स्थिति या वर्ग के अभ्युदय में सहायक होती है।

सोचें और करें 3

अपने चारों ओर देखो। अपने आस–पास काम करने वाले सामाजिक संजाल का निरीक्षण करें। वे आपके अपने संजाल या आपके सन्निकट वातावरण में हो सकते हैं। यह आपकी समझ को समृद्ध करेगा कि वास्तविक जीवन में सामाजिक नेटवर्क कैसे संचालित होते हैं। यदि संभव हो तो अपने निरीक्षणों पर एक प्रस्तुति बनाएं और अपने केंद्र पर अपने दोस्तों के सामाजिक संजाल के भीतर उसे प्रस्तुत करें और एक–दूसरे के अनुभवों से सीखें।

बोध प्रश्न 4

i) सामाजिक संजाल क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

ii) सामाजिक संजाल अभिजन वर्ग की स्थिति के संरक्षण में कैसे मदद करता है?

.....

.....

.....

.....

.....

iii) समाजशास्त्र में "हेजिमनी" (आधिपत्य) की अवधारणा किसने दी?

– सी. राइट मिल्स – विलफ्रेडो पेरेटो

– एंटोनियो ग्राम्स्की – कार्ल मार्क्स

.....

.....

.....

.....

.....

iv) जनसमूह पर अभिजन वर्ग के आधिपत्य को बनाए रखने में सांस्कृतिक ज्ञान कैसे सहायता करता है?

.....

.....

.....

.....

.....

v) ज्ञान सामाजिक स्थिति का सूचक कब बनता है?

.....

.....

.....

.....

.....

6.5 सामाजिक संस्थाएँ: अभिजनों का पुनरुत्पादन

अभिजन वर्ग के पुनरुत्पादन की प्रक्रिया में, सामाजिक संस्थानों की भूमिका लगभग उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी पारिवारिक स्थिति का वंशानुक्रम। हालांकि, पारिवारिक वंशानुक्रम

सामाजिक संस्था के चयन में एक निर्णायक कारक बना रहता है, चाहे वह शैक्षणिक संस्थान हो या सामाजिक संघ हो जिसके साथ अभिजन वर्ग जुड़ना पसंद करते हैं। सामाजिक संघ पहले स्थान पर एक अभिजन वर्ग का निर्माण करके और दुसरे स्थान पर सामाजिक शक्ति से गैर–अभिजन वर्ग के लोगों को पृथक कर एक दोहरे उद्देश्य को प्रस्तुत करते हैं। ऐसे संघों को सामाजिक रूप से नए संपन्नों के उदय के खिलाफ एक अगुआ के रूप में समझा जाता है। गैर–अभिजन वर्ग के लोगों की आर्थिक गतिशीलता में वृद्धि के साथ, पारिवारिक अभिजन खतरा महसूस करतें है। इस तरह के विकास की पृष्ठभूमि में अभिजन संघों की लोकप्रियता और भी अधिक बढ़ जाती है और इसलिए उनका बहिष्करण उस चीज से होता है जिसे वे 'अन्य' के रूप में देखते हैं।

अभिजन क्लब में शामिल हो रहे नए अभिजन पुराने अभिजनों के साथ अपने हितों के समन्वय में कुशलतापूर्वक व्यव्हार करते है। इस प्रकार, समान हितों और संस्कृति को साझा करके, वर्ग के संस्थापन का मार्ग प्रशस्त करते है। इस समझ के आधार पर, उच्च वर्ग के परिवारों में अभिजन वर्ग मजबूती से स्थापित हो जाते है, वे संघ जैसी संस्थाओं के माध्यम से मध्यस्थता करते हैं, और सामान्य हितों द्वारा संचालित होते हैं। जबकि संघ और परिवार अभिजनों को सामाजिक पाबन्दी का आधार प्रदान करते हैं, विद्यालय और विश्वविद्यालय जैसे शैक्षणिक संस्थान विशेष रूप से जटिल बने रहते हैं। एक तरफ, वे व्यक्ति के उत्थान की गतिशीलता के लिए एक श्रेष्ट प्रोत्साहन प्रदान कर सकते हैं, वहीं साथ ही वे सबसे अधिक प्रतिबंधकर्ता द्वारपालन संस्थान भी हो सकते हैं।

विद्यालयों की संख्या में वृद्धि और विद्यालयी शिक्षा के उनके प्रतिमान में बदलाव ने उन्हें अभिजनों के अध्ययन के लिए एक फलदायी आधार बना दिया है। स्कूल असमानताओं को मजबूत करने का एक तंत्र बन गए हैं, जिसमें कुलीन वर्ग के छात्रों का जन्मसिद्ध अधिकार उनके परिचय पत्र में बदल जाता है। यह सीधे तौर पर शैक्षिक संस्थानों के माध्यम से अभिजनवाद के पुनरुत्पादन के तरीकों पर असर डालता है। शैक्षिक संस्थानों का तर्क सीधे संबंधपरक है और अभिजन वर्ग के अभिविन्यास से मेल खाता है। उदाहरण के लिए अभिजन बोर्डिंग विद्यालयों का मामला लीजिए। पुराने स्थापित अभिजन परिवारों ने नए संपन्नों, उद्योगपति और जनसमूह से खुद को वर्गीकृत करके अपनी सांस्कृतिक पहचान को बढ़ाने के प्रयास की अपनी इच्छा के परिणामस्वरूप उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में वे बहुत लोकप्रिय हो गए। इसलिए, सामाजिक संघों की तरह ही विद्यालय भी अभिजन वर्ग के पुनरुत्पादन का स्थल बन जाते हैं। यह समझने के लिए कि कैसे अभिजनवाद और विद्यालय एक–दूसरे से मेल खाते हैं, आइए हम भारत के मामले पर विचार करें।

नीचे दिए गए बॉक्स में पढ़ें।

बॉक्स 2. अभिजनवाद और विध्यालय : भारत के संदर्भ में

ब्रिटिश शासन के अंत में भारत में साक्षारता दर 12% दर्ज की गई थी। इसे भारत की खराब सामाजिक–आर्थिक स्थितियों के प्रमुख संकेत के रूप में देखा गया था। शिक्षा ज्यादातर पारीवारिक अभिजनों तक सीमित थी, इस मानक आदर्श का बहुत अधिक उल्लंघन नहीं किया गया था। साथ ही, विद्यालयों की संख्या बहुत कम थी, औपनिवेशिक शासन काल में शिक्षा अभिजन वर्ग का विशेषाधिकार बन गया था। हालांकि स्वतंत्रता के बाद, योजना आयोग और कई शिक्षा समितियों के गठन के बाद, सभी समावेशी शिक्षा नीतियां लागू हुईं। इसने शिक्षा को अभिजन अल्पसंख्यकों के चंगुल से बाहर निकाला। भूमंडलीकरण और आधुनिकता के आने के बाद, शिक्षा के परिदृश्य ने एक बार फिर ऐतिहासिक बदलाव को देखा। एक स्तर पर, भारत वैश्विक शिक्षा प्रणाली की ओर अग्रसर

हुआ और दूसरी तरफ, शिक्षा की लागत बहुत अधिक हो गई है। विद्यालयों का चयन परिवार की आय के आधार पर अचानक बदल गई। विद्यालयों को भी समाज के वर्ग के अनुसार पदानुक्रम में व्यवस्थित कर दिया गया, जो अपने बच्चों को उन के पास भेजना वहन कर सकते थे। इसलिए, एक ओर जहां दून स्कूल, बिशप कॉटन और अन्य जैसे उच्च वर्ग के विद्यालय हैं जो पुराने कुलीन परिवारों की आवश्यकता को पूरा करते हैं मध्य स्तर पर अभी भी चिन्मय विद्यालय, दिल्ली पब्लिक स्कूल आदि जैसे उच्च वर्ग के विद्यालय हैं, जहाँ सिविल सेवकों या उच्च वर्ग के व्यापारियों के परिवारों से संबंधित छात्रों को प्रवेश मिलता है। निम्नतम स्तर पर मध्यम वर्ग के और निम्न वर्ग के लोग अभी भी राज्य प्रायोजित शैक्षणिक संस्थानों पर निर्भर हैं।

बोध प्रश्न 5

i) ऊपर किन दो सामाजिक संस्थाओं की चर्चा की गई है, उनका सीधा असर अभिजन वर्ग के पुनरुत्पादन पर पड़ता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ii) अभिजन संजाल में सामाजिक संघों की प्रमुखता के लिए समाजशास्त्रीय तर्क क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

iii) अभिजन वर्ग बनाम जनसमूह के अध्ययन के अनुसार शिक्षण संस्थानों को किस प्रकार की द्विभाजन का सामना करना पड़ रहा है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

iv) अभिजन वर्ग अपनी स्थिति के पुनरुत्पादन के लिए विद्यालयों को उपयुक्त कैसे बनाते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6.6 सारांश

कुलीन वर्ग और जनसमूह की परिभाषा एक से अधिक कारकों के अनुरूप भिन्न हो सकती है। ये उस समाज के खंड हो सकते हैं जिसमें वे स्थित हैं, या व्यवसाहिक क्षेत्र हो सकते है जिसे वे संचालित करते हैं। यह उनकी शैक्षिक योग्यता का स्तर हो सकता है, या फिर केवल उन परिवारों की जिसमें वे जन्म लेते हैं। संगीत, कला रंगमंच के लिए उनकी उच्च स्तरीय सांस्कृतिक और बौद्धिक रूचि या एक के बजाय दूसरे प्रकार के सामाजिक संघ के लिए उनकी प्राथमिकता हो सकती है। इसलिए, अभिजन वर्ग और जनसमूह की एक विलक्षण परिभाषा को इस प्रकार से परिणामित करना बहुत कठिन है। लेकिन, जो इन दो अवधारणाओं – अभिजन वर्ग और जनसमूह की समझ के केंद्रीय स्थित है, वह यह है कि इन दोनों को केवल एक दूसरे के उपप्रमेय के रूप में समझा जा सकता है। जनसमूह के बिना कोई अभिजन नहीं हो सकता है और बिना अभिजन जनसमूह नहीं हो सकती है। यह संसाधनों पर उनके नियंत्रण का परिणाम है जो यह तय करता है कि कौन अभिजन वर्ग है और कौन नहीं है।

जो राजनीतिक संसाधनों तक अपनी पहुंच के आधार पर हावी हैं, वे किसी दिए गए समाज के शासक बन जाते हैं। इस प्रकार, अल्पसंख्यक बहुसंख्यक जनसमूह पर शासन करते हैं। उत्पादन और वितरण के आर्थिक संसाधनों पर वर्चस्व रखने वाले लोग आर्थिक अभिजन वर्ग बन जाते हैं। ये फिर भी अल्पसंख्यक बने रहते हैं जो गैर–अभिजनों के बहुसंख्यक लोगों का शोषण करते हैं। और, फिर अन्य प्रकार के कुलीन वर्ग हैं जो राज्य, निगमों और सेना जैसे सत्ता के संस्थानों में उच्च स्थान रखते हैं, ये शक्तिशाली कुलीन हैं। लेकिन, सभी अभिजनों के समान होने के पीछे जो एक सामान्य तथ्य बना हुआ है वह यह है कि वे किसी भी समाज में अल्पसंख्यक हैं, फिर भी वे महत्वपूर्ण सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक संसाधनों पर सबसे अधिक वर्चस्व रखते हैं।

अभिजन अपनी सांस्कृतिक पूंजी, सामाजिक संजाल और शिक्षा को अपने स्तर के संरक्षक उपकरण के रूप में इस्तेमाल करते हुए, गैर अभिजन वर्ग से अपनी विशिष्टता बनाए रखते हैं। इसके अलावा, वे शिक्षा और अवकाश के सामाजिक संस्थानों – शैक्षणिक संस्थानों और सामाजिक संघों पर क्रमशः नियंत्रण के इस्तेमाल द्वारा, अपनी स्थिति के पुनरुत्पादन को सुनिश्चित करते हैं।

6.8 उपयोगी पुस्तकें

- बॉर्डियू, पियरे. (1984). डिसटिंग्शन. कैम्ब्रिज. एम.ए.रू हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

- डोमहॉफ, जी. डब्ल्यू. (1978). हू रिअली रूल्स?. न्यू यॉर्क. ट्रांसलेशन बुक्स
- ग्रामसी, एंटोनियो. (1971). सलेक्शन्स फ्रॉम दा प्रिजन नोटबुक्स. न्यू यॉर्क. आई एन टी
- मिल्स, सी. राइट. (1956). दा पॉवर इलीट. ऑक्सफोडर्स ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस
- पेरेटो, विलफ्रेडो। (1935)। द माइंड एंड सोसाइटी। लंदनरू जोनथन केप

6.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

i) शासी और गैर–शासी अभिजन वर्ग।

ii) अभिजन वर्ग के व्यक्तियों में सामान्य सामाजिक मूल होता है और वे गैर–अभिजन वर्ग या जनसमूह से गुणात्मक परिवर्तन प्राप्त करने के लिए अपने संबंध बनाए रखते हैं। अभिजन एक जोड़नेवाली इकाई की तरह काम करते हैं, जिसमें वे एक दूसरे को स्वीकार करते हैं और समझते हैं, और यहां तक कि एक जैसा सोचते हैं।

iii) योग्यता।

बोध प्रश्न 2

i) लोमड़ी और शेर

ii) विलफ्रेडो पेरेटो ने "अभिजनों के परिसंचरण" के विचार को प्रस्तावित किया। इसमें उन्होंने दो तरीके सुझाए जिसमें किसी दिए गए समाज में शासक अभिजन वर्ग गतिशील रहते हैं, न कि स्थिर, जिसमें एक का क्षय दूसरे के उदय का मार्ग प्रशस्त करता है। सर्वप्रथम, उनके अनुसार, यह समाज के अभिजन और गैर–अभिजन वर्ग के बीच व्यक्तियों का परिसंचरण है। शासक अभिजन वर्ग को तब प्रतिस्थापित कर किया जाता है, जब गैर–शासक वर्ग के लोग इनके वर्ग में घुसपैठ करना शरू कर देते हैं .. दूसरा, अभिजनों का परिसंचरण अभिजतों के एक समूह का दुसरे समूह द्वारा प्रतिस्थापन सुनिश्चित कर सकता है, जब तक बाद के समूह अपने गुणों पर अधिकार कर वृद्धि करें, जो कि शासक अभिजन वर्ग के लिए आधारभूत विशेषताएं हैं तब तक पूर्व के समूह में इन विशेषताओं के पतन के संकेत दिखाई देने लगते है।

iii) पूंजीवाद धीरे–धीरे एक आर्थिक और राजनीतिक प्रणाली द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया जाएगा, जिसे प्रबंधकीय अभिजन वर्ग द्वारा चलाया जाएगा, क्योंकि पूंजीपतियों ने अपने व्यवसाय का नियंत्रण उन लोगों को हस्तांतरित कर दिया है जो पेशेवर प्रबंधकों को रखने की क्षमता रखते है।

iv) शक्तिशाली अभिजन वे हैं जिन्होंने संस्थानों में सर्वोच्च पदों पर कब्जा किया हुआ हैं। वही शक्तिशाली अभिजन वर्ग राजनीतिक क्षेत्र या सरकार में भी सत्ता के प्रमुख पदों पर सफलतापूर्वक अधिकार कर लेते है।

बोध प्रश्न 3

i) पियरे बॉर्दियू अपने उत्कृष्ट कार्य डिस्टिंक्शन (1984) के माध्यम से।

ii) पहला, यह एक व्यक्ति को अपनी पहचान बनाने में मदद करती है; और दूसरा, यह

एक सीमा बनाती है, जो स्वयं के और दूसरों के निर्माण की ओर ले जाने का नेतृत्व करती है ।

iii) जैसे आर्थिक पूंजी किसी व्यक्ति को आर्थिक रूप से सशक्त बनाती है और उसे एक आर्थिक अभिजन बनाती है, ठीक उसी तरह, संस्कृति जब पूंजी के रूप में देखी जाती है, तो वह व्यक्ति को दूसरों की तुलना में सांस्तिक रूप से अधिक सक्षम बनाती है। इसे देखते हुए, सांस्कृतिक पूंजी जीवन के अवसरों को प्रभावित करती है। यह किसी व्यक्ति की जीवन शैली, शिक्षा प्राप्ति, वैवाहिक चयन, कैरियर विकल्प और यहां तक कि सामान्य पसंद और नापसंद पर एक महत्वपूर्ण असर डालती है।

iv) उन्नीसवीं शताब्दी के माध्यम से, अभिजन वर्ग और जनसमूह की पसंद और नापसंद या रूचि के बीच बहुत अंतर नहीं था। बाद में, इस प्रवृत्ति में बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में एक तीव्र बदलाव देखा गया। स्वयं और जनसमूह के बीच एक अंतर बनाने के प्रयास में अभिजन वर्ग ने अच्छे संगीत जैसे शास्त्रीय और ओपेरा की अपनी रूचि को पसंद में परिवर्तित करना प्रारंभ कर दिया। वे निम्न बौद्धिक जनसमूह से बिलकुल विपरीत उच्च सांस्कृतिक और बौद्धिक रूचि वाले वर्ग बन गए। लेकिन इस प्रवृत्ति में फिर से बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के दौरान एक बदलाव देखा गया, जब सांस्कृतिक अभिजन वर्ग की रूचि शास्त्रीय, जैज, विश्व संगीत और हिप हॉप का मिश्रण अधिक हो गई।

बोध प्रश्न 4

i) सामाजिक संजाल मूल रूप से एक व्यक्ति को सहभाजित जीवन के अवसरों और हितों के साथ समुदाय से जोड़ने वाले संबंधों की संरचना है।

ii) चाहे वह व्यक्ति हों, संगठन हों या राष्ट्र हों, सूक्ष्म या वृहद स्तर पर सभी सामाजिक कार्यकर्ता दूसरों के सुझाव, सलाह, सूचना या संसाधनों को साँझा करके, समर्थन और आलोचनाओं के साथ अपने रोजमर्रा के जीवन का निर्माण करते हैं। किसी के सामाजिक संजाल के भीतर इस तरह की परस्पर क्रिया, उसके कार्यों, व्यवहार, विचारों और मान्यताओं को प्रभावित करती हैय जो अभिजनवाद के गुणों को सदृढ़ करती है।

iii) एंटोनियो ग्रामसी

iv) सांस्कृतिक ज्ञान से सशक्त वे शासितों को शासकों के मूल्यों को साँझा करने या अपनाने के लिए सहमत करते हैं। अतः उदाहरण के लिए; अभिजन वर्ग अपने सांस्कृतिक ज्ञान के उपयोग द्वारा एक विशेष राजनीतिक विचारधारा की सदस्यता लेने के लिए जनसमूह को संगठित करते हैं।

v) अभिजन वर्ग के समतुल्य बुद्धिजीवियों के उदय होने के साथ ही, ज्ञान स्वयम ही सामाजिक स्थिति का संकेतक बन जाता है। उनकी व्यावसायिकता और सामाजिक–सांस्कृतिक पूंजी के साथ–साथ उनकी योग्यता उनकी सामाजिक स्थिति या वर्ग के अभ्युदय में सहायक होती है।

बोध प्रश्न 5

i) सामाजिक संघ और शैक्षिक संस्थान

ii) ऐसे संघों को सामाजिक रूप से नए संपन्नों के उदय के खिलाफ एक अगुआ के रूप

में समझा जाता है। गैर–अभिजन वर्ग के लोगों की आर्थिक गतिशीलता में वृद्धि के साथ, पारिवारिक अभिजन खतरा महसूस करतें है। इस तरह के विकास की पृष्ठभूमि में अभिजन संघों की लोकप्रियता और भी अधिक बढ़ जाती है; और इसलिए उनका बहिष्करण उस चीज से होता है जिसे वे 'अन्य' के रूप में देखते हैं।

iii) एक तरफ, वे व्यक्ति के उत्थान की गतिशीलता के लिए एक श्रेष्ट प्रोत्साहन प्रदान कर सकते हैं, वहीं साथ ही वे सबसे अधिक प्रतिबंधकर्ता द्वारपालन संस्थान भी हो सकते हैं।

iv) नए संपन्नों, उद्योगपति और जनसमूह से खुद को वर्गी.त करके अपनी सांस्.तिक पहचान को बढ़ाने के लिए विद्यालयों को उपयुक्त बनातें हैं।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY